"जय श्री राम"

श्री

हनुमान चालीसा

विस्तृत व्याख्या

शिव शर्मा

शीर्षक - श्री हनुमान चालीसा - विस्तृत व्याख्या

लेखक - शिव शर्मा . 217, प्रगति नगर, कोटड़ा, अजमेर।
मो0 9252270562, 9588927938 www.geetaandadhyatm.com

प्रथम संस्करण - 2021

टाईप सेटिंग - शिव शर्मा

प्रकाशक - परा वाणी प्रकाशन, 217, प्रगति नगर, कोटड़ा, अजमेर।

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

Graphics, Digitization and PDF Compilation By:
Silver The Studio, Ajmer. Mo – (+91) 9024032320
Website: - www.silverthestudio.com

सार की बात!

सार की बात - भक्ति सार्वकालिक एवं सार्वजनिक चेतना है। धर्म, जाति, पंथ, सम्प्रदाय, देश, प्रांत आदि में बंटे हुए मनुष्य ने इसके भी विभाजक नाम रख दिए हैं - कृष्ण भक्त, राम भक्त, शिव भक्त, गुरु भक्त आदि। किंतु भक्ति वाली चेतना से अनुप्राणित हुए बिना कोई मनुष्य भक्त नहीं होता। सारे भक्तों में यही उर्ध्व चेतना प्रवाहित है। भक्ति की ऊर्जा वैश्विक है। उसमें श्रद्धा, समर्पण, प्रेम, रति (प्रभु के साथ एकत्व) और आनंद है। यह सर्वत्र एक जैसा है। जैसे पेय जल का एक ही स्वाद है; वैसे ही भक्ति में एक ही रस है - आनंद, स्वयं से मुक्ति, अहं से मुक्ति।

आप धूप में बैठे हुए हैं तो – विटामिन डी मिलेगा, उष्णता मिलेगी, अंधेरा नहीं रहेगा, चारों तरफ के अनेक सूक्ष्म जीवाणु मर जाएंगे, आप के गीले कपड़े सूख जाएंगे। ऐसे ही भक्ति के प्रभाव से – अंदर के विकार मरते हैं, अज्ञान दूर होता है, प्रभु की तरफ बढ़ने के लिए ऊर्जा मिलती है, भीतर एक तरह की निश्चिंतता रहती है कि भगवान साथ हैं। धूप में कोई भी बैठ सकता है - किसी भी जाति धर्म का मनुष्य, किसी भी पंथ का अनुयायी, किसी भी गुरु का शिष्य। इसी तरह भक्ति में कोई भी डूब सकता है। वहां अभेद है। **यदि भक्त कहलवा कर भी तुम्हारी भेद बुद्धि नहीं मिटी, तो तुम भक्त हो ही नहीं; तुमने भक्ति की ही नहीं। यदि अभी भी तुम्हारे अहंकार का कद तुम से ऊंचा है, तो तुम किसी गुरु के मुरीद हो ही नहीं।**

हनुमान इस भक्ति भाव की परम अवस्था है। वे भक्ति का चरम रूप हैं। उन्होंने भक्ति का साधारणीकरण कर दिया। इसलिए हनुमान एक व्यक्ति नहीं हैं। वे भक्ति भाव का अनादि अनंत सत्य हैं।

इस पुस्तक में हमने हनुमान जी की जीवनी नहीं लिखी है, हनुमान चालीसा की व्याख्या की है। हनुमान जी की फंतासी नहीं लिखी है, महिमा मण्डन वाली कथाएं नहीं लिखी हैं। ...हनुमान चालीसा की व्याख्या में भी दो बातों का ध्यान रखा है – 1. सामान्य मनुष्य को इस रचना का अर्थ अच्छी तरह समझ में आए 2. प्रबुद्ध भक्त व पाठक को भी संतुष्टि हो जाए। चारों युगों में जिन हनुमान का उजियारा और 'परताप' रहा है, वे मेरे लिए एक व्यक्ति नहीं हैं; अनन्य भक्ति का साकार रूप हैं। जैसे ब्रह्म समष्टि चेतन शक्ति है, वैसे ही हनुमान भी समष्टि भाव भक्ति हैं। वे स्वामी की निष्काम सेवा का वैश्विक आदर्श हैं। मेरे लिए वे भक्ति, सेवा और शौर्य की ज्योति हैं।

मैं कथाकार नहीं हूं; न ही प्रवचन करता हूं। मैं अध्येता साधक हूं; बुद्धि संगत अर्थ ग्रहण करता हूं। भक्ति में अतिरंजिता नहीं होती है, मौन गहराई होती है। इसलिए हमने यथा बुद्धि, यथा समझ एवं यथा भक्ति यह कार्य किया है।

मेरे दीक्षा गुरु **सूफी संत हज़रत हरप्रसाद मिश्रा 'उवैसी'** ही इस कार्य के भी प्रेरक व साक्षी हैं।

उन्हें शत् शत् प्रणाम !

- शिव शर्मा

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।
आठौं याम हनुमान, जपे राम हरे हरे।।

श्री

हनुमान चालीसा

(सरलार्थ, भावार्थ एवं गूढ़ार्थ)

"दोहा"

श्री गुरु चरन सरोज रज, निजमनु मुकुरु सुधारि।

गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा है – मेरे गुरु नरहरि स्वामी श्री युक्त हैं। श्री यानी शोभा, आध्यात्मिक विभूति, यश, कीर्ति आदि। चरण सरोज अर्थात् कमल रूपी चरण – कमल जल में रहते हुए भी पानी से ऊपर रहता है। ऐसे ही मेरे गुरुदेव संसार में रहते हुए भी सांसारिक भोग, विलास, वासना, तृष्णा, पंच विकार, क्लेश आदि से मुक्त हैं। ऐसे गुरु द्वारा मुझे परम ज्ञान प्राप्त हुआ है। मैं देह नहीं आत्मा हूं, निष्काम हूं, अनासक्त हूं। इस ज्ञान से मैंने अपने मन रूपी दर्पण को साफ किया है। ज्ञान से मन की कामनाएं, वासनाएं, विकार आदि भस्म हो जाते हैं। मन साफ हो जाता है। प्रभु दर्शन के लिए मन का निर्मल होना जरूरी है। दर्शन के बिना उनके विषय में लिखना असम्भव है। ...तो अपना मन मैंने गुरु की कृपा से साफ किया। साफ होते ही वहां श्रीराम का जीवन चरित प्रत्यक्ष हो गया। त्रेता युग में जो कुछ हुआ था, वह मन में दिख गया। अब मैं उनका वैसा ही वर्णन कर रहा हूं।

अद्भुत होती है गुरु कृपा - एक अनाथ लड़का देवर्षि नारद हो गया। लुटेरा रत्नाकर, महर्षि वाल्मीकि बन गया। पतन के गर्त में गिर गए अजामिल का उद्धार हो गया। ऐसे ही अनाथ बालक रामबोला, महाकवि गोस्वामी तुलसीदास के रूप में प्रसिद्ध हुआ। ...एक बार कृष्ण ने नारद के हाथ से पानी नहीं पीया; कहा कि तुम नागुरु हो। नारद फिर गुरु की तलाश में भटकता रहा। इनके जैसे देवर्षि का गुरु कौन बने! तब कृष्ण ने ही एक महात्मा के पास भेजा। वह शूद्र था। किंतु मरता, क्या नहीं करता! नारद ने उस शूद्र को गुरु बना लिया। तब कृष्ण बोले कि तुम चौरासी लाख योनियां पार करोगे तब ही मैं तुम्हारे हाथ से जल ग्रहण करूंगा। नारद वापस गुरु के पास गए। गुरु बोले कि कृष्ण से चौरासी लाख योनियों की सूची ले आओ। नारद ने ऐसा ही किया। तब गुरु ने उस सूचीपत्र को नारद के शरीर से रगड़ कर फेंक दिया और कहा – अब कृष्ण के पास जाओ। ...कृष्ण ने पानी पीते हुए कहा – **अब समझे तुम गुरु का महत्व!** तुलसीदास ने इसीलिए प्रथम पंक्ति में **गुरु वंदना** की है।

बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि।।

गुरु वंदना के बाद कह रहे हैं कि मैं अब श्रीराम के यश का वर्णन कर रहा हूं। प्रभु का यश कैसा है! शुद्ध, सत्, चित् और आनंदमय है। जिसे सुन लो तो ही तर जाओ। उनके यश गान से मनुष्य जीवन के चारों पुरुषार्थ सिद्ध हो जाते हैं। प्रभु श्रीराम की कथा सुनने मात्र से कल्याण हो जाता है।

जीवन के चार पुरुषार्थ हैं – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। भक्ति, ज्ञान, योग और नाम जप। सामीप्य, सारूप्य, सान्निध्य एवं सायुज्य मुक्ति। यह सब मिल जाता है। मानव धर्म का, आश्रम धर्म का, गार्हस्थ्य धर्म का, वैदिक धर्म का निर्वाह हो जाता है – ब्रह्मचर्याश्रम में वेद पढ़ना। गृहस्थाश्रम में ब्राह्मण ग्रंथों के अनुसार जीवन व्यतीत करना। वानप्रस्थाश्रम में आरण्यक ग्रंथों का पारायण और सन्यास की अवस्था में उपनिषद पढ़ना यानी आत्मज्ञान का बोध। ...धर्म यानी कर्तव्य कर्म। अर्थ; निर्लोभी भाव से आजीविका का उपार्जन। काम; सृष्टिचक्र को बनाए रखने के लिए श्रेष्ठ संतान का प्रजनन। मोक्ष अर्थात् निष्काम अवस्था में शेष जीवन व्यतीत करते हुए अंततः पुनर्जन्म से मुक्ति। अब भक्ति के चार फल – पहला सामीप्य; भाव में डूबते हुए ऐसा लगे कि प्रभु के समीप हो गए हों। दूसरा सारूप्य; मानस में भगवान का रूप दिखने लगे। तीसरा सान्निध्य; वैकुण्ठ धाम में प्रभु के साथ रहने की अनुभूति। चौथा सायुज्य; परमधाम में भगवान से एकाकार की अवस्था। इस तरह ...**प्रभु श्रीराम कथा के श्रवण से इतने फल मिलते हैं।**

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार।
बल बुधि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार।।

तुलसी का कहना है कि अनाथ रहा हूं। दुर्बल हूं। मुझ में समझ नहीं है। मुझे भले बुरे की पहचान नहीं है। देह - आत्मा के अंतर की अनुभूति नहीं है। तनु यानी मैं

अथवा अल्प; अज्ञानी। योग दर्शन में अविद्या के लिए तनु व अल्प शब्द आया है। ऐसा समझ कर ही मैं आपको (हनुमान को) याद कर रहा हूं। तुलसी अब बल, बुद्धि व विद्या मांग रहे हैं। तन स्वस्थ तो कर्तव्य सधेंगे। मन स्वस्थ तो भक्ति सधेगी। बुद्धि स्वस्थ तो अविद्या मिटेगी। भक्ति में स्वयं को अज्ञानी मान कर ही प्रभु के चरणों में समर्पण सम्भव है। किताबी ज्ञान से अहंकार रहता है। ऐसा मनुष्य झुकता नहीं है। तुलसी को तो उनके गुरु ने नाना पुराण, निगमागम का अध्ययन करा दिया था। फिर भी वे स्वयं को बुद्धिहीन कह रहे हैं। भक्त में ऐसी ही विनम्रता होती है। उन्होंने श्रीराम के दर्शन कर लिए। इस कारण स्वयं की तुच्छता का ज्ञान हो गया।

अब वे प्रार्थना कर रहे हैं कि इस शरीर को, हृदय को और मस्तिष्क को शक्ति दो – धर्म व कर्तव्य का निर्वाह करने के लिए सामर्थ्य दो। फिर कहा – अच्छा बुरा देख लेने की समझ दो। **भटकूं नहीं, भ्रमित नहीं होऊं, का ज्ञान करा दे उसे विद्या कहते हैं। जो देह बोध से उठा कर आत्मबोध में प्रवेश करा दे, उसे विद्या कहते हैं।**

आगे निवेदन करते हैं कि हरहु क्लेश विकार। शास्त्र में पांच क्लेश माने गए हैं – अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश (मृत्यु से बचने की चिंता)। ऐसे ही पांच विकार हैं – काम, क्रोध, मद, मोह और लोभ। ये सब मनुष्य का पतन करते हैं। इसलिए तुलसी ने प्रार्थना की है कि इन दसों क्लेश-विकारों का हरण कर लो, मिटा दो, छुटकारा दिला दो। क्लेश – विकार से मुक्त हुए बिना भक्ति सम्भव नहीं, भक्ति भाव में डूबना मुमकिन नहीं। ...महामहोपाध्याय गोपीनाथ जी ने लिखा है कि देह बोध से ऊपर उठ कर भाव भूमि पर स्थिर रहने से ही भक्ति आरम्भ होती है। अविद्या एवं विकारों से अलग हट जाने को ही देह से ऊपर उठ कर भाव भूमि पर स्थिर होना

कहा गया है। भाव की चरम अवस्था ही भक्ति है। भाव की अतल गहराई में डूबना ही भक्ति है।

तुलसी यह सब अर्जित करने के लिए हनुमान जी से प्रार्थना करते हैं।

"चौपाई"

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।।

जग जीवन से अहंकार को दूर करने वाले हनुमान जी, मेरे भी **'अहम्' को मिटाएं**। ...आप में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का ज्ञान निहित है; आत्मज्ञान से आप का हृदय प्रकाशित है; अतः हे पवन पुत्र! आप मेरे अंतर्मन में भी ज्ञान का अवतरण कराएं। ...आप समस्त गुणों से आपूरित हैं – संयम, शौर्य, अनासक्ति, सेवा, शील, आठों सिद्धियां, नौ निधियां आदि। हे रामदूत, अपनी कृपा से मुझे भी गुणवान बनाएं। ...आप कपि जाति वाले मानव समाज के अधिपति रहे हैं; और वनवासी श्रीराम की आपने सहायता की है, प्रभु का हृदय जीता है। अतएव, कृपया हम पर भी ऐसा अनुग्रह करें कि हम श्रीराम के सेवक बन सकें।

श्री हनुमान का ऐसा यश तीनों लोकों में व्याप्त है - भूलोक, स्वर्ग लोक एवं पाताल लोक में आप सबका कल्याण करते हैं। भू के ऊपर ये लोक हैं – भुवर्लोक, महः, जनः, तपः और सत्यलोक। पाताल में ये लोक हैं - अतल, वितल, सुतल, तलातल,

महातल, रसातल और पाताल लोक। तीनों शरीर (स्थूल, सूक्ष्म, कारण) के बंधन काटते हैं। तीनों गुण (सत्, रज, तम) धारी मनुष्यों का भला करते हैं। तीनों योनियों (देव, मानव एवं तिर्यक) के जीव आपके गुणगान से खुद का उपकार कर सकते हैं। ...तिर्यक - असुर या पाप योनि।

हनुमान जी को कपीश कहा गया है यानी मानवरूपी वानर समाज में श्रेष्ठ कपि जाति के अधिपति। एप्स (Apes) प्रजाति की नर-वानर जाति के स्वामी। वन में रहने वाले नर समाज में कपि अधिक विकसित थे। उनके पिता श्री केसरी भी वानरों के राजा थे। वर्तमान गुरिल्ला, चिम्पांजी आदि ऐसे ही मानवनुमा वानर हैं।

एक अन्य मत भी है – कपीश शब्द वस्तुतः कल्पीश का बिगड़ा हुआ रूप है। कल्प + ईश = कल्पीश। कल्प यानी ब्रह्मा का एक दिन। इस तरह कल्पीश का अर्थ हुआ पूरी अपरा प्रकृति के स्वामी। प्रकृति के पांचों महाभूत पर जिसका नियंत्रण हो गया है। उसकी कीर्ति तीनों लोकों में है।

धरती पर ही तीन लोक की प्राचीन अवधारणा ऐसी रही है – हिमालय में ब्रह्मसर, कैलाश मानसरोवर, तिब्बत, संग्रीला घाटी तक स्वर्ग लोक एवं वैकुण्ठ। उतर प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि भू लोक और दक्षिण में लक्ष द्वीप, अण्डमान निकोबार तक पाताल लोक। पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र तक भी असुर बस्तियां फैली हुई थीं। पूर्व दिशा के ऊपरी भाग में नाग, गंधर्व, यक्ष, किन्नर आदि रहते थे। अन्य विद्वानों के अनुसार असुर बस्तियां आस्ट्रेलिया व दक्षिणी अमेरिका तक भी थीं।

रामदूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।।

कौन हैं हनुमान! प्रभु श्रीराम के दूत और क्या खासियत है इस रामदूत में!

1. अतुलित बलधामा। 2. राम, लखन, सीता मन बसिया। 3. तुम मम प्रिय भरत सम भाई। 4. राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे। 5 ...अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता। अस वर दीन्ह जानकी माता। 6. राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहहु रघुपति के दासा।

- ऐसे हनुमान जी हम सब पर कृपा करें।

व्याख्या – महाविष्णु के अवतार श्रीराम के दूत हैं हनुमान। सन्देश वाहक हैं। उनकी बात मानव जगत तक पहुंचाते हैं। भगवान, उनके मुंह से बोलते हैं। आपकी बात वे ही प्रभु तक पहुंचाते हैं। इसलिए **जय श्री हनुमान।**

अब, भगवान के दूत में अपार शक्ति तो होगी ही। सागर लांघते समय जिस पहाड़ से उछाल मारी, वह पर्वत ही उनके जोर से पाताल में धसक गया – **बार बार रघुबीर संभारी। तरकेउ पवन तनय बल भारी।।** ...संजीवनि बूटी का पूरा पहाड़ ही उठा कर ले आए। चार सौ योजन वाले समुद्र को एक ही उड़ान में पार कर लिया; बीच की बाधाएं ध्वस्त कर दीं। लंका में महारथी रावण एवं अतिरथी मेघनाथ के होते हुए भी

अकेले ही वहां आग लगा दी, रावण के एक पुत्र सहित अनेक राक्षसों को मार दिया और माता सीता से आशीर्वाद ले कर लौट आए। यह है अतुलनीय बल। ज्ञान, विज्ञान व शारीरिक बल – सब कुछ अतुलनीय। मानस में ऐसा प्रसंग भी है कि हनुमान ने युद्ध के दौरान रावण पर मुष्टि प्रहार किया तो वह मूर्च्छित हो गया। होश में आने पर बोला कि – बहुत बलवान हो! अब यदि वे भगवान शिव के ही अवतार हैं तो अतुलित बल धामा होंगे ही! ये पवन पुत्र हमारी भी रक्षा करें।

- हनुमान को प्रभु राम के गुणगान में ही आनंद की अनुभूति होती है; शेष सारा संसार नीरस लगता है। उनके हृदय में राम-लक्ष्मण-सीता सदैव विराजमान रहते हैं (उन्होंने हृदय चीर कर दिखाया कि वहां यही त्रिमूर्ति विद्यमान है)। अंदर कोई कामना नहीं, संकल्प-विकल्प नहीं, राग नहीं, विकार नहीं। इनके लिए जगह ही नहीं है - पूरे चिदाकाश में राम-लक्ष्मण-जानकी व्याप्त हैं। अंजनि पुत्र हमें भी ऐसी भक्ति का सूत्र दें।

- श्रीराम ने कहा कि तुम मुझे मेरे भाई भरत के समान प्रिय हो। कौन भरत! प्रभु का कथन देखिए – **इस संसार में भरत जैसा निष्काम सेवक दूसरा कोई नहीं है।** ऐसे भरत के समान उन्होंने हनुमान जी को माना। **जय श्री हनुमान।**

- श्रीराम के परमधाम 'साकेत' के द्वारपाल श्री हनुमान हैं। उनकी आज्ञा के बिना अंदर कोई नहीं जा सकता है। तुम्हारी भक्ति का मूल्यांकन पहले हनुमान करेंगे। तुम प्रभु से मिलने के योग्य हो भी या नहीं, यह हनुमान तय करेंगे। प्रभु का उन पर इतना अधिक विश्वास है। ये हैं **'अंजनि पुत्र पवन सुत नामा'**।

- इनके पास आठों सिद्धियां (सामर्थ्य) हैं – अणिमा, लघिमा, गरिमा, महिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशत्व और वशित्व। सारा वैभव (निधियां) हैं - पद्म, महापद्म, नील, मुकुन्द, नंद, मकर, कच्छप, शंख और मिश्र या सर्वनिधि। अशोक वाटिका में सीता माता ने इन्हें ऐसा वर दिया था।

- राम रसायन तुम्हरे पासा। उनके पास राम नाम रूपी रसायन है। रसायन – महा औषधि जो तीनों तरह के कष्ट समाप्त कर दे - आधि दैविक, आधि भौतिक एवं आध्यात्मिक। राम का नाम इस कलियुग में कल्पतरू के समान सारी मनेकामनाएं पूर्ण कर देता है | इसी के असर से हनुमान चिरंजीवि हैं। वे अनंत काल तक श्रीराम के ही भक्त हैं। **इसीलिए हनुमान चालीसा के नियमित पाठ को सर्व मंगलकारी कहा गया है।**

आप अंजनी के पुत्र हैं। पवनसुत के रूप में विख्यात हैं। अंजनी, पूर्व जन्म में अप्सरा थी। ऐसे ही उनके पति केसरी भी मरुत् के अवतार थे – शास्त्रों में 49 मारुत् गण का उल्लेख मिलता है। यों कुल 418 देव गणों का वर्णन मिलता है। गण यानी समूह; गण अर्थात् श्रेष्ठजन। तो गण यानी देवताओं के कार्य करने वाले। पवन देवता के 49 गण, मरुत् या मारुत्। केसरी ऐसे ही एक गण के अवतार थे। इसलिए भी हनुमान को पवन सुत कहा गया है।

महावीर विक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।।

शब्दार्थ – महावीर = मन, कर्म, वचन पर संयम वाला। विक्रम = जो अपनी शक्ति से क्रम को उलट दे; उलट फेर कर देने में सक्षम। बजरंगी - कोई भी हथियार जिसके शरीर पर घाव नहीं कर सके। कुमति - दुर्बुद्धि, दुष्ट। निवार - मिटा देना। सुमति - सदबुद्धि वाला। संगी - साथ देना, मदद करना, साथ रहना।

अर्थ – हनुमान जी की महिमा का वर्णन किया गया है। उनका अपने मन पर संयम है, स्थिर मन वाले हैं। कामनाओं के वश में नहीं हैं। उनकी वाणी सिद्ध है। वे असत्य नहीं बोलते हैं। वे कर्मवीर हैं, उन्होंने निष्काम भाव से प्रभु राम के सारे काम किये। उन्होंने महाबली रावण की लंका में कोहराम मचा दिया। लंका की द्वारपाल लंकिनी को मार दिया। लंका में आग लगा दी, अनेक राक्षसों का संहार किया और सैनिकों से घिरे हुए रावण के दरबार से सुरक्षित निकल गए (विक्रमी)। उनका शरीर अक्षत है; कोई भी हथियार उसे घायल नहीं कर सकता है। ऐसे हनुमान हम पर कृपा करें।

श्रीराम के परमभक्त हनुमान के दर्शन मात्र से मनुष्य की दुर्बुद्धि नष्ट हो जाती है – राक्षसी लंकिनी ने कहा कि आपके निकट आते ही मेरा राक्षसी भाव समाप्त हो गया। मुझे स्वयं का पूर्व जन्म याद आ गया कि मैं प्रजापति ब्रह्मा की द्वारपाल थी और उनके ही शाप से राक्षस योनि में आई। अब मेरा उद्धार हो गया है। ये हनुमान दुष्टों

का नाश भी करते हैं। दूसरी तरफ सज्जन, सदाचारी, उत्तम विचार वालों की सहायता करते हैं; उनके मित्र (संगी) बन जाते हैं। **वे अपने भक्तों के कुविचार समाप्त कर देते हैं तथा बुद्धि को शुद्ध कर देते हैं.......जय श्री हनुमान।**

कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुण्डल कुँचित केसा।।

हनुमान जी ने तुलसीदास को ब्राह्मण के वेष में दर्शन दिये थे। उस रूप का ही यहां वर्णन है - आप स्वर्ण जैसे कांतिवान हैं। आपकी पोशाक बहुत सुन्दर शोभा पा रही है। दोनो कानों में कुण्डल चमक रहे हैं। हनुमान जी के बाल घुंघराले हैं। वस्तुतः हनुमान जी के पिता श्री केसरी, वानर राज थे। इसलिए हनुमान जी के वस्त्र राजसी बताए गए हैं। सुबेसा कहा गया है; सु यानी सुंदर। कंचन वरन अर्थात् तेजोमय, तेजस्वी, कांतिवान वे योगी थे। योग से शरीर में तेजस्विता दमकने लगती है। योगी जन के कानों में कुण्डल, एक परम्परा है। इसके अलावा राजकुल या सम्भ्रांत वंश में भी पुरुष कुण्डलधारी होते हैं। इनका केश विन्यास भी पृथक ढंग वाला होता है। इसी को यहां कुंचित केसा कहा गया है। कुलीन ब्राह्मण के वेश में भी ऐसी ही शोभा झलकती है। तुलसीदास जी ने इसीलिए श्रीहनुमान के व्यक्तित्व का प्रभावशाली शब्दांकन किया है।

हाथ वज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेउ साजै।।

हनुमान जी के हाथ में वज्र है और कंधे पर मूंज की जनेऊ शोभित है।

हनुमान को वज्र मुष्टि वाले कहा जाता है। उनका मुष्टि प्रहार वज्र (देवराज इंद्र का अमोघ हथियार जो ऋषि दधीचि की रीढ वाली हड्डी से बनाया गया था) जैसा कहा गया है। ऐसे ही हाथ की पांचों अंगुलियों में पांच तत्व हैं – धरती, जल, अग्नि, वायु और आकाश। इनके पांच गुण या शक्तियां हैं; गंध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द। अब इन पांचों अंगुलियों को आपस में बांध लेने से मुट्ठी बनती है। ...हनुमान के नियंत्रण में ये सार तत्व या शक्तियां हैं। इसलिए भी उन्हें वज्र मुष्टि वाला माना गया है। उन्होंने चार मनुष्यों पर मुष्टि प्रहार किया था। लंकिनी पर तो हल्का प्रहार किया था। उधर मेघनाद, कुम्भकर्ण एवं रावण पर क्रमशः तेज मुष्टि प्रहार किये। तीनों ही मूर्छित हुए। रावण ने हनुमान के प्रहार में निहित शक्ति की बहुत प्रशंसा की थी। ...उनका तो सारा शरीर ही वज्रांग कहा जाता है। ...तो हाथ वज्र.......विराजे, का यह अर्थ है। ध्वजा विजय, सतोगुण, कीर्ति आदि का प्रतीक है। यह अर्थ हनुमान पर चरितार्थ होता है।

अब मूंज की जनेऊ की बात करें। मूंज एक तरह की घास होती है। लगभग तीन मीटर लम्बी होती है। उसके तीन रेशों से बनी हुई जनेऊ वे धारण करते हैं। मूंज से

मिट्टी का कटाव, अपरदन आदि रुकता है। मूंज की जनेऊ से शरीर की चमड़ी का क्षय थमता है। मंत्रोच्चारण के परिणाम स्वरूप यह सकारात्मक ऊर्जा का कवच हो जाती है। ...जनेऊ को यज्ञोपवीत कहते हैं। इसके तीन धागे, तीन आध्यात्मिक सत्य का बोध कराते हैं - **1. मुझे ईश्वर को धारण करना है (निश्चय) 2. भगवान मेरे अंदर ही हैं (विश्वास) और 3. मैं यानी आत्मा, परमात्मा से अलग नहीं हूं (ज्ञान)।** ...हनुमान के हृदय में इसीलिए श्रीराम को दिखाया गया है।

हनुमान जी की भक्ति के प्रसंग में हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए। ऐसे ही निश्चय, संकल्प एवं ज्ञान का भाव धारण करना चाहिए।

संकर सुवन केसरी नंदन।
तेज प्रताप महा जग वंदन।।

हनुमान जी को भगवान शिव का पुत्र भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि अंजना एक अप्सरा (पुंजिकस्थला) थी। ब्रह्मा जी के शाप से धरती पर वानर जाति में जन्मी। उस ने शिव जी की तपस्या की। वरदान में उन्हें ही पुत्र के रूप में मांग लिया। तब पवन देवता ने शिव जी की शक्ति ले जा कर अंजना को दी थी। इसलिए उक्त शक्ति से जन्मे पुत्र को शंकर सुवन और पवन पुत्र भी कहा जाता है। उन्हें शिव के ग्यारहवें रुद्र का अवतार भी कहा जाता है। ...तो हनुमान, भगवान शिव जैसे ही तेजस्वी हैं। साथ ही पवन देवता की कृपा के कारण वायु वेग से आवागमन में समर्थ

हैं। उनकी तेजस्विता एवं शौर्य संसार में प्रसिद्ध है। वे असुर निकंदन हैं। उनकी हुंकार से तीनों लोक कांप जाते हैं। यही उनका प्रताप है। उनमें ज्ञान, भक्ति और निष्काम कर्म का समन्वय है; यही उनका तेज या तेजस्विता है। इसी कारण उनकी सर्वत्र वंदना, पूजा, भक्ति की जाती है। कृत या सतयुग से कलियुग तक वे पूजनीय हैं। राम रावण युद्ध में हनुमान का ऐसा व्यक्तित्व सामने आया है।

विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर।।

यहां हनुमान जी की तीन विशेषताएं बताई गई हैं – अनेक विद्याओं में निपुण, दैवी गुणों से सम्पन्न और चतुर; कार्य करने में निष्णात। तो पहले देखें कि वे विद्यावान थे। शास्त्रों में कुल 64 विद्याएं बताई गई हैं। हनुमान ऐसी अनेक कलाओं के ज्ञाता थे – अग्नि रोधक कवच धारण करके सूर्य के निकट चले गए। विज्ञान आज सूर्य के पास अंतरिक्ष यान भेजने का प्रयास कर रहा है। वे जल को बांधना जानते थे। उड्डयासन लगा कर समुद्र को पार कर गए। उन्होंने रावण को एक रासायनिक गलती करने के लिए मजबूर किया था। लंका में आग लगा दी। वे जानते थे कि कृत्रिम वर्षा कराने का ज्ञाता रावण उक्त आग बुझाने के लिए बरसात कराएगा। ऐसा होते ही धधकती आग के अति तेज ताप के कारण आक्सीजन व हाईड्रोजन के परमाणु टूट कर अलग हो जाएंगे। तब आक्सीजन तो आग को और ज्यादा भीषण कर देगी तथा हाईड्रोजन गैस भयानक विस्फोट करेगी। ...ऐसा ही हुआ। रावण ने कृत्रिम वर्षा

कराई। परिणाम विपरीत देख कर बोला कि हनुमान का वैज्ञानिक ज्ञान मुझ से भी अधिक है। ...हनुमान ने छाया पकड़ने वाले रडार (राक्षसी) को नष्ट कर दिया। वह लंका की सुरक्षा के लिए लगा हुआ था। उन्होंने सुरसा की घेराबंदी को भी स्वयं की क्षमता (बड़ा और सूक्ष्म हो जाने की सामर्थ्य) से विफल किया। सेतुबंध के समय सागर के जल को बांध दिया और पुल बनाना आसान कर दिया। ...तो विद्यावान का यह तात्पर्य है।

उनमें समस्त दैवीय गुण थे। इसीलिए उन्हें 'सुर भूप' कहा गया है। वे कूटनीति व समर नीति में पारंगत थे - श्रीराम की वानर नरेश सुग्रीव से मैत्री कराई, रावण के मित्र बाली का अंत कराया, विभीषण को राम की शरण में ला कर लंका एवं रावण की शक्ति के भेद जाने, लक्ष्मण के लिए संजीवनी बूटी लाए, मेघनाद व रावण के गुप्त यज्ञ (इनकी पूर्णता उन्हें अजेय बना देती) को भंग कराया आदि। ...इतनी सामर्थ्य से सम्पन्न श्री हनुमान अपने स्वामी श्रीराम के कार्य करने के लिए प्रतिपल तत्पर रहते थे।

प्रभु चरित सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।।

हनुमान जी भक्त हैं। उन्हें श्रीराम का गुणगान करने व उनकी कथा सुनने के अलावा कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। वे रसिया यानी रस लेते हैं, उन्हें आनंद आता है - केवल श्रीराम की भक्ति में, उनकी ही कथा में। उन्हें छप्पन भोग नहीं चाहिए।

वस्त्राभूषण में उनकी तनिक भी रुचि नहीं है। उनके राम सर्व व्यापी हैं – बाहर और भीतर राम ही हैं। सीना चीर कर दिखा दिया कि अंदर राम-लक्ष्मण-सीता विराजमान हैं। हृदय में और कुछ है ही नहीं – कामना, लक्ष्य, संकल्प-विकल्प, मोह-ममता, एषणाएं आदि कुछ नहीं।

भक्त ऐसा ही होता है। उसके लिए भोजन भी प्रसाद है, स्वाद नहीं। हर धड़कन में प्रभु के नाम का जाप है। इंद्रियों के भोग शांत, मन निर्विकार, बुद्धि स्थिर। आत्मा में केवल राम (ज्ञान) की अनुभूति। ...अयोध्या में सबको विदा करने के बाद प्रभु ने हनुमान को पूछा कि तुम क्या चाहते हो! हनुमान बोले आपके चरणों में नित स्थान। आपके अलावा मेरा कोई है ही नहीं; कहां जाऊं! ...ऐसी भक्ति ने उन्हें चिरंजीवि कर दिया।

मीरा ने भी कहा कि मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई – कृष्ण के अलावा अन्य कोई है ही नहीं। सब में कृष्ण है। सूरदास बोले – मेरो मन अनत कहां सुख पावै। जैसे उड़ि जहाज को पंछी फिरि जहाज पै आवै; भगवान के अतिरिक्त मेरा मन अन्यत्र कहीं भी सुखी नहीं रह सकता है। रैदास तो और आगे बढ़ गए – प्रभु जी! तुम चन्दन हम पानी; एक मेक हो गए। भेद ही मिट गया - भक्त अपने भगवान में लीन हो गया। अब पता ही नहीं कि कौन भगवान और कौन भक्त। गीता में श्रीकृष्ण भी कहते हैं कि मैं अपने भक्त से पृथक नहीं हूं। इधर राम भी हनुमान के हृदय में हैं।

तो हनुमान को श्रीराम की सेवा में, उनकी कथा सुनने में और उनके कार्य करने में ही आनंद की अनुभूति होती है।

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे।।

हनुमान जी को आठों सिद्धियां प्राप्त थीं। लघिमा सिद्धि के द्वारा उन्होंने माता सीता के सामने सूक्ष्म (छोटा, सामान्य) रूप धारण किया और प्रभु श्रीराम की निशानी दी; उनका सन्देश भी सुनाया। गरिमा सिद्धि के द्वारा विकट रूप धारण किया तथा लंका में आग लगाई। विकट यानी भीषण। ऐसे ही महिमा शक्ति से भीम (बड़ा, विशाल) रूप बना कर राक्षसों का संहार किया (राम रावण युद्ध में मायावी शक्तियों का बहुत प्रयोग हुआ था। मेघनाद एवं कुम्भकर्ण के पास भी ऐसी शक्तियां थीं)। इस तरह हनुमान जी ने अपने स्वामी वनवासी श्रीराम के कार्य करने के लिए अनेक रूप धारण किये।

जिस तरह आप के निगेटिव फोटो से कितना भी बड़ा पॉजिटिव प्रिंट बनाया जा सकता है, वैसे ही मनुष्य का सूक्ष्म शरीर चाहे जितना विशाल या छोटा रूप धारण कर सकता है। ऐसा योग बल से सम्भव होता है। लेकिन यह हड्डी माँस वाला शरीर नहीं होता है; परमाण्विक देह होती है। वैसे भी प्रत्येक मनुष्य का सूक्ष्म शरीर परमाण्विक और कारण शरीर प्रकाशीय होता है। आत्मा ज्योति स्फुलिंग होती है। परमात्मा ज्योति रुप है।

लाय संजीवनि लखन जियाए।
श्री रघुबीर हरषि उर लाए।।

युद्ध में मेघनाद के शक्ति बाण से लक्ष्मण मूर्छित हो गए। वैद्यराज सुषेण को लंका से बुलाया गया। उन्होंने कहा कि कल सूर्योदय से पहले यदि संजीवनि बूटी उपलब्ध हो जाए तो लक्ष्मण के जीवन की रक्षा सम्भव है। तब हनुमान जी ने उक्त कार्य किया। लक्ष्मण का जीवन बच गया। इस कारण अवतारी श्रीराम इतने अधिक खुश हुए कि उन्होंने हनुमान को हृदय से लगा लिया। भगवान जब किसी को कलेजे से लगा लेते हैं तो वह तत्काल प्रभु में एकाकार हो जाता है। **श्रीराम ने दो ही बड़भागियों को हृदय से लगाया था – भरत और हनुमान।** श्रीकृष्ण ने केवल सुदामा को हृदय से लगाया। अर्जुन, उद्धव, विदुर आदि के गले लगे किंतु हृदय से नहीं लगाया।

तो लक्ष्मण जैसे अनुज की प्राण रक्षा के आधार हनुमान को राम ने हृदय से लगा लिया यानी वे हनुमान के हृदय में उतर गए। हनुमान को स्वयं में उतार लिया। अभेद हो गए। भेद समाप्त कर दिया। उन्हें स्वयं का माध्यम बना दिया – हनुमान की सहमति से ही श्रीराम तक पहुंच सकोगे; ऐसी व्यवस्था कर दी। **यह सब चुपचाप हो गया। कोई घोषणा नहीं की। ...कृपा निःशब्द बरसती है। आशीर्वाद का ढोल नहीं पीटा जाता है।** भगवान तो कुछ नहीं बोले – सारी बात तो तुलसीदास ने उजागर की। प्रभु ने आठों सिद्धियों व नौ निधियों के सुख संसार में बांटने का अधिकार हनुमान को दे दिया। ...अपने भाई के जीवन की रक्षा करने वाले पर श्रीराम न्यौछावर हो गए।

तुलसीदास ने डंके की चोट पर कह दिया कि हनुमान का ध्यान करने वाले के जन्म-जन्मांतर के सारे भोग कर्म समाप्त हो जाते हैं - **मन, क्रम, वचन ध्यान जो लावै। जनम जनम के दुख बिसरावै।।**

हनुमान ने भगवान को हर्षित कर दिया। भाई की मूर्छा से शोक में डूबे हुए श्रीराम को आनंदित कर दिया। बस, उन्होंने खुद को हनुमान पर कुर्बान कर दिया। अब राम दरबार में हनुमान की धाक बढ़ गई – **राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।**

हृदय स्थल में 12 पत्तियों वाले कमल के फूल के आकार जैसा सूक्ष्म अनाहत चक्र होता है। यहां अनहद नाद गूंजता है - ब्रह्माण्ड में जो ओम् की ध्वनि गूंज रही है, वही प्रत्येक मनुष्य के हृदय स्थल वाले इस चक्र में भी सुनी जा सकती है। राम ने हनुमान को हृदय से लगा कर उनमें सनातन ओम् श्रुतिगोचर (सुनने योग्य) कर दिया। इसीलिए तुलसी बाबा ने कहा - **पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप।।**

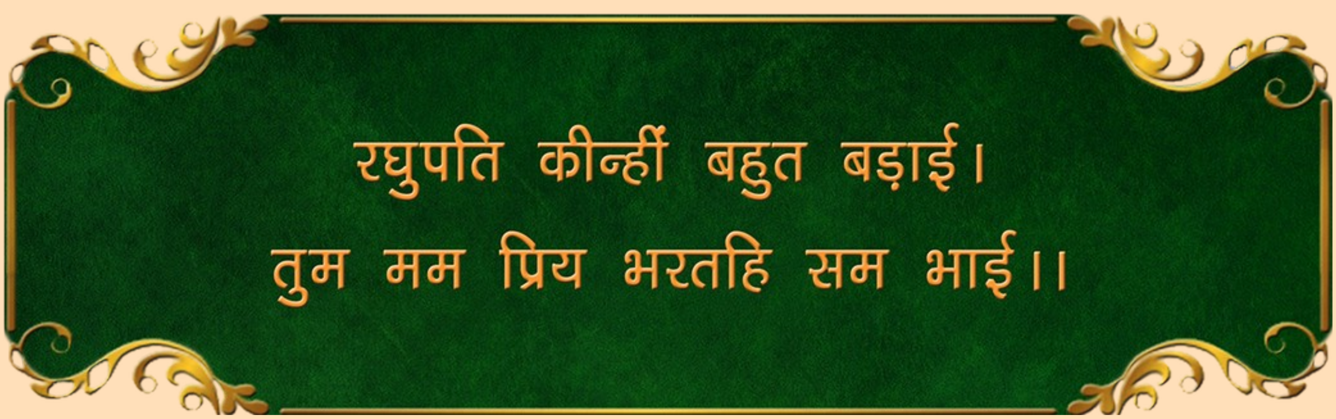

हनुमान जी संजीवनि बूटी ले आए। लक्ष्मण जी बच गए। तब प्रभु ने श्री हनुमान की प्रशंसा करते हुए कहा – तुम मुझे मेरे भाई भरत के समान प्रिय हो। यह नहीं कहा कि लक्ष्मण या शत्रुघ्न के समान अच्छे लगते हो। तो समझें कि भरत में ऐसा क्या था कि श्रीराम ने उक्त बात कही !

1. अयोध्या का साम्राज्य ठुकरा दिया और कहा कि श्रीराम की सेवा ही मेरे जीवन का परमार्थ है।

2. वे राम को लौटा लाने के लिए वन में गए। लक्ष्मण को शंका हुई कि भरत उन पर आक्रमण न कर दें। तब श्रीराम बोले कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश के तीनों पद एक साथ मिल जाने पर भी भरत में लोभ या अहंकार नहीं आएगा। उसके जैसा शीलवान मनुष्य विश्व में नहीं है।

3. प्रभु के पास जाते वक्त वे प्रयाग में भारद्वाज ऋषि से मिले। भारद्वाज जी ने अपने शिष्यों को कहा – सभी तरह की साधनाओं का परम फल श्रीराम के दर्शन हैं। उस का भी परम फल भरत के दर्शन हैं। भरत के आने से प्रयागराज भी धन्य हुआ।

4. राम की चरण पादुकाएं उन्होंने सिंहासन पर रख दीं। खुद के लिए नंदी ग्राम में कुटिया बनाई और 14 साल सन्यांसी की तरह रहे – दिन में राजकीय कार्य का वहीं से संचालन करते थे एवं रात में तपस्यारत रहते। उधर उनकी पत्नी माण्डवी भी जोगन की भांति रहीं।

5. भरत के लिए रामचरितमानस में कहा गया है कि - **जो न होत जग जनम भरत को। सकल धरम धुर धरनि धरत को।। कवि कुल अगम भरत गुन गाथा। को जानइ तुम बिनु रघुनाथा।।**

अर्थ – यदि भरत जी का जन्म नहीं होता तो पृथ्वी पर सारे धर्मों को अन्य कौन धारण करता ! कवि गण तो उनके व्यक्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। हे रघुवीर! आपके बिना और कोई इन भरत जी के चरित्र की विशालता एवं गहराई नहीं जान सकता है। ...ऐसे अनुपम भरत के समान हनुमान को प्रभु ने प्रिय कहा है। **जय श्री हनुमान!**

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं।।

संजीवनी बूटी वाले प्रसंग से श्रीराम ने खुश होकर हनुमान की प्रशंसा की – तुम्हारा यशगान तो हजारों लोग करते हैं। दूसरा अर्थ – हजार मुंह (फन) वाले भगवान शेषनाग भी तुम्हारा गुणगान करते हैं। अर्थात् तुम बड़े यशस्वी हो। यह कह कर श्री यानी लक्ष्मी पति या समस्त वैभव के स्वामी राम ने उन्हें गले लगा लिया। भगवान ही जिसे गले लगा लें उसे इस विश्व में और क्या चाहिए! बड़े बड़े साधु, सन्यासी व तापसी उन प्रभु के दर्शन मात्र के लिए तरसते हैं; और अनन्य सेवक हनुमान को वे गले लगा रहे हैं! धन्य हैं हनुमान। ...सेवा भाव से कर्म करके ही हम ईश्वर के हृदय तक पहुंच सकते हैं।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।

ब्रह्मा जी के मानस पुत्र सनक, सनन्दन, सनत्कुमार व सनातन कहे गए हैं। ये ब्रह्म लोक में रहते हैं। ये भी हनुमान का गुणगान करते हैं। ऐसे ही (ब्रह्मादि यानी) ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी उनकी कीर्ति सुनाते रहते हैं। सारे मुनिगण, देवर्षि नारद, विद्या की देवी सरस्वती और नाग देवता (अहीसा, सांपों के स्वामी शेषनाग या अहि + ईस = नाग देवता) भी इसी तरह इस राम भक्त का महिमा गान करते रहते हैं। ...इस तरह सिद्ध होता है कि श्रीराम व उनके भक्त हनुमान, दोनों ही अनादि हैं। इस मनवंतर के चारों युगों में हनुमान की महिमा लोक समाज में रहती है। ऐसे 27 चतुर्युग बीत चुके हैं। इस समय 28 वें चतुर्युग का कलिकाल चल रहा है। 14 मनवंतर से ब्रह्मा का एक दिन बनता है। अभी सातवां मनवंतर चल रहा है। इसे वैवस्वत कहते हैं। इससे पहले बीत चुके 6 मनवंतर के नाम हैं – स्वयुम्भुव, स्वरोचिष, औत्तमि, तमषा, रैवत, चाक्षुष। एक मनवंतर में 71 चतुर्युग होते हैं इस तरह एक मन्वंतर की आयु 306720000 वर्ष बताई जाती है।

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कवि कोविद कहि सके कहाँ ते।।

अब तुलसीदास बता रहे हैं कि हनुमान की प्रशंसा कौन कौन करते हैं! और उनका गुणगान अनिवर्चनीय है। ...मृत्यु के देवता यम, धन के देवता कुबेर, दसों दिशाओं के अधिपति दिक्कपाल भी हनुमान का यशगान करते हैं। इसका तात्पर्य यह कि – हनुमान भक्त को यमराज नहीं ले जाएगा; धर्मराज उसके पास आएंगे। ऐसे ही वह भक्त धन धान्य से पूर्ण रहेगा। **दसों दिशाओं में उसकी कीर्ति फैलेगी।**

राम भक्त हनुमान का गुणगान कविगण भी नहीं कर पाते हैं; कुछ न कुछ शेष रह ही जाता है। ऐसे ही कोविद यानी ज्ञानी या बड़े बड़े विद्वान भी उनके पूरे व्यक्तित्व का वर्णन नहीं कर सकते हैं।

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा।।

हनुमान जी ने वानर राज बालि के भाई सुग्रीव का भला किया। वह बालि के डर से पहाड़ की गुफा में रहता था। उसे वनवासी श्रीराम से मिलवा दिया। दोनों की मैत्री करा दी। संधि करा दी – तुम राम जी की अपहृत पत्नी सीता की खोज में सहायता करो । बदले में श्रीराम , बालि को मार कर तुम्हें किष्किंधा का राजा बना देंगे। ऐसा ही हुआ।

अब पूरी बात को समझें – बालि व सुग्रीव भाई थे। बालि किष्किंधा का राजा था। उसके धर्म पिता देवराज इंद्र थे। इंद्र ने बालि को ब्रह्मा जी से एक अभिमंत्रित स्वर्ण हार दिलाया और कहा कि इसे धारण करके जब तुम युद्ध करोगे तो अजेय रहोगे – शत्रु की आधी शक्ति क्षीण हो कर तुम में आ जाएगी।

बालि वानर जाति का था। मनुष्य जैसा ही था। विज्ञान में मानवनुमा चार प्रजातियां मानी गई हैं – गुरिल्ला, चिम्पांजी, मनुष्य और कपि। कपि वर्ग में ही वानर (वन में रहले वाला नर) भी एक उप प्रजाति है। इनमें अब मनुष्य सबसे अधिक विकसित है। ...तो बालि वानर नरेश था। उसका विवाह वानर जाति के वैद्यराज सुषेण की पुत्री तारा से हुआ। एक बार दुंदुभि नामक असुर से बालि का युद्ध हुआ। दोनो एक गुफा में चले गए। सुग्रीव बाहर प्रतीक्षा करता रहा। एक वर्ष बीत गया। बालि को मृत समझ कर मंत्रियों ने सुग्रीव को राजा बना दिया। तब बालि की पत्नी तारा भी उसकी ही रानी मान ली गई।

...एक साल बाद बालि लौट आया। उसने दुंदुभि को मार दिया। सुग्रीव की हकीकत जानते ही बालि ने उसे पीटा। डर कर सुग्रीव भाग गया। साथ में उसके कुछ समर्थक (हनुमान आदि) भी थे। तब सुग्रीव अनाश्रित हो गया। सीता हरण के बाद हनुमान ने

ऐसे असहाय सुग्रीव की मैत्री श्रीराम से कराई थी। हनुमान यह भी जानते थे कि रावण एवं बालि के मध्य एक सामरिक संधि हुई थी। उसके अनुसार दोनो में से किसी पर भी कोई बाहरी शक्ति आक्रमण करती है तो वे दोनों मिलकर उसका मुकाबला करेंगे। इसलिए भी बालि को मारना जरूरी था। तो, हनुमान की चतुराई से बालि मारा गया, रावण की शक्ति क्षीण हुई और उनका चहेता सुग्रीव राजा हो गया।

> तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना।
> लंकेश्वर भए सब जग जाना।।

लंका दहन से पहले हनुमान जी का विभीषण से मिलना हुआ। रावण के सारे भेद जानने के लिए उन्होंने उससे मंत्रणा की। उसके सामने स्पष्ट किया - लंका में तो अब सर्वनाश होगा। रावण, उसके भाई, पुत्र, संबंधी व सारी सेना का अंत निश्चित है। ...तुम विष्णु के भक्त हो। श्रीराम उन्हीं के अवतार हैं। इसलिए तुम मेरे प्रभु की शरण में जाओ। इसके फलस्वरूप तुम मरने से तो बचोगे ही, लंका के राजा भी बनोगे। विभीषण ने उक्त सलाह मान ली। श्रीराम की शरण में चला गया। लंका के सारे भेद बता दिये – गुप्त यज्ञशाला, प्रयोगशाला, सैन्यशक्ति, सुरक्षा व्यवस्था, गुप्त मार्ग आदि। इन सबके अलावा रावण की मृत्यु का रहस्य भी बता दिया – ब्रह्माजी ने दशानन को एक बाण दिया था; और कहा कि तुम्हारी मृत्यु केवल इसी तीर से होगी। उक्त बाण को मंदोदरि ने अपने शयनकक्ष के एक स्तम्भ में चिनवा दिया। विभीषण ने उक्त बात

हनुमान जी को बता दी। फिर लंका दहन के समय जो अफरा तफरी मची, उस वक्त पवनपुत्र ने वह तीर निकाल लिया और श्रीराम को दे दिया। इस तरह विभीषण ही लंका के विनाश का कारक बना।

फिर उसका भी अंत हुआ। लंकेश हो जाने के बाद वह स्वेच्छाचारी बन गया। जनता दुखी रहने लगी। उधर रावण की ही एक रानी धन्यमालिनी का पुत्र (अरिमर्दन) बड़ा हो गया। लंका युद्ध के समय वह अल्पायु था, इसलिए बच गया। लंका की प्रजा उसके नेतृत्व में संगठित हो गई। विभीषण के विरुद्ध युद्ध हुआ। अयोध्या से सेना भेजी गई। किंतु कथित तौर पर अनाचारी विभीषण हार गया। वह वन में चला गया। वहीं उसका अंत हुआ। **प्रभु की कृपा को सहेज कर रखना भी तपस्या से कम नहीं है।**

जुग सहस्र जोजन पर भानू।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।

जुग, युग यानी दो या समय की एक निश्चित अवधि। यहां इसे दिव्य युग वाली अवधि समझना उचित नहीं है। यहां यह शब्द 'सहस्त्र' के बहुवचन की तरह प्रयुक्त हुआ है – हजारों। तुलसी ने कहा कि जो सूर्य हजारों योजन दूर है, वहां भी हनुमान की पहुंच है। यहां बाल हनुमान के जीवन की प्रतीकात्मक घटना है। प्रातः कालीन सूर्य थोड़ी ललाई लिये हुए होता है। गोल होता है। उस समय प्रकाश की तेजस्विता उसमें

नहीं होती है। बालक हनुमान ने उसे देखा तो सोच लिया कि कोई मीठा फल है। बस, फिर क्या! उड़े आकाश में। पवन देवता ने खुद की शक्ति दे दी। अग्नि देव ने स्वयं का कवच दे दिया। परिणामस्वरूप हनुमान जले नहीं। आकाश तत्व उनकी कनिष्ठा उंगली में निहित कहा गया है। इस कारण उनका मुंह इतना विशाल हो गया कि सूर्य भी उसमें समा गया। लील्यो यानी मुंह में ले लिया। यह सूर्य एक सहस्त्र (हजार) योजन (एक योजन - आठ मील) दूर था – उस समय की गणना के अनुसार। आज की गणना के मुताबिक यह 9,29,60000 मील दूर है। ...इस चौपाई का भावार्थ यह है कि सारी प्रकृति प्रभु शक्ति के अधीन है। जिस देवता या मनुष्य में इस शक्ति का अवतरण हो जाता है उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। ...आज भी सूर्य विज्ञान में पारंगत महात्मा त्वरित गति से वस्तुओं का निर्माण एवं विलय कर सकते हैं। महावतार बाबा जी महाराज, स्वमी विशुद्धानंद जी आदि इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं। अदृश्य सिद्धाश्रम में रहने वाले महात्मा भी ऐसी शक्तियों से सम्पन्न कहे जाते हैं।

...पंचमुखी हनुमान में प्रकृति के पांचों महाभूत (आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी) हैं। इसलिए प्रकृति उनके अधीन है। सूरज, चांद, तारे आदि सब उनके नियंत्रण में हैं। ...पौराणिक मान्यता के अनुसार हमारा सूर्य तो भुवर्लोक में ही है – भूमि के बाहरी वायुमण्डल से ले कर सूर्य तक जो स्थान है वह भुवर्लोक है। ऐसे ही सूर्य से ध्रुवलोक तक स्वर्गलोक है। ध्रुवलोक से ऊपर शेष लोक हैं। ...उधर हनुमान जी की पहुंच तो साकेत लोक तक थी। इसलिए सूर्य तक पहुंच जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। उनके पिता केसरी बहुत तेजस्वी थे; दिव्य शक्तियों से युक्त थे। हनुमान को ऐसी शक्तियां विरासत में मिलीं। वे गगनचारी हो गए। उनके विराट

रूप के पीछे प्रातः कालीन सूर्य वैसे ही लुप्त हो गया, जैसे घने बादल के पीछे छिप जाता है। इसी का आलंकारिक एंगल से महिमा मण्डन करते हुए कवि ने लिख दिया – **लील्यो ताहि मधुर फल जानू।**

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।।

सीता की खोज के लिए उन्हें समुद्र पार करना था। यद्यपि वे पवन देव की कृपा से वायु में उड़ सकते थे, किंतु प्रभु का मान रखने के लिये ऐसा नहीं किया। यों भी नहीं कहा कि प्रभु! आप चिंता नहीं करें; मै हवा में उड़ सकता हूं। …भगवान ने उन्हें अंगूठी देते हुए कहा कि यह सीता को दे देना। इस आधार पर वह तुम्हें मेरा दूत मान लेगी। …हनुमान जी ने वह अंगूठी मुंह में रख ली। उन्होंने जामवंत आदि के सामने यही व्यक्त किया कि उक्त अंगूठी के प्रताप से ही वे आकाश में उड़ कर लंका पहुंचेंगे। इस तरह उन्होंने विशाल समुद्र पार कर लिया। इसमें आश्चर्य की बात नहीं।

प्रभु कृपा से सब कुछ सम्भव होता है।

दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।।

यहां दुर्गम शब्द का अर्थ देखें दु: + गम = कठिन है। जिस जगह पहुंचना; या जिस काम को करना मुश्किल हो। तो इस धरती के कठिनतम स्थान पर भी आप की कृपा से पहुंचना सरल हो जाता है। श्री हनुमान समुद्र को लांघ कर लंका में पहुंच गए। ...इसी भांति मुश्किल से मुश्किल काम को करना भी इनकी कृपा से सहज हो जाता है - श्री हनुमान संजीवनि बूटी के लिए पूरा पहाड़ ही उठा कर ले आये थे - कठिनतम कार्य। ...महारथियों से सुरक्षित लंका में अकेले हनुमान जी ने आग लगा दी, रावण के पुत्र अक्षयकुमार को मार दिया, अनेक सैनिकों को धराशायी कर दिया, सीता जी से मुलाकात कर ली और वहां से लौट आए। ये सारे कठिन कार्य थे। इसीलिए **तुलसीदास जी ने भरोसा दिलाया है कि भक्तजन! डरो मत: श्री हनुमान के भरोसे रहो!** तुम्हारे सारे कार्य सम्पन्न होंगे। अनुग्रह यानी कृपा: हनुमान जी की कृपा से सर्वमंगल है, कल्याण है, सब कुछ सहज है। नौकरी, व्यापार, शादी, संतान, मकान आदि की बात छोड़िए! ये तो प्रभु श्रीराम के दर्शन भी करा देते हैं। जिस पर मन हो जाए उसे श्रीराम के दिव्य धाम साकेत में भी प्रवेश करा दें।

राम दुआरे तुम रखवारे।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे।।

शब्दार्थ : राम दुआरे - परम राम का निवास वैकुण्ठ धाम। तुम - परम भक्त हनुमान। रखवारे - रक्षक, द्वारपाल। होत न - सम्भव नहीं। आज्ञा बिनु - प्रभु की अनुमति के बिना, हनुमान जी की सहमति के बिना। पैसारे - प्रवेश, श्रीराम के साकेत धाम में प्रवेश।

अर्थ – भगवान श्रीराम का निवास वैकुण्ठ या साकेत है। उसके द्वारपाल श्री हनुमान हैं। भक्त का रुतबा तो देखिए कि प्रभु ने उसे स्वयं के दिव्यधाम के द्वार का रक्षक बना दिया। अब उनकी सहमति के बिना भीतर कोई नहीं जा सकता। आठ वसु, ग्यारह रुद्र, नौ देवियां, उन्चास मरुत् व अन्य देवता भी हनुमान जी की अनुमति से ही प्रभु के पास जा सकते हैं। ...पहले खुद का परिचय दो; योग्यतम को ही अंदर जाने की अनुमति मिलेगी। वैकुण्ठ में प्रवेश का मतलब है मोक्ष, मुक्ति। तो हर किसी को भीतर कैसे जाने देंगे। हनुमान जी मूल्यांकन करेंगे।

तात्पर्य – भक्ति से श्रीराम के दर्शन (मुक्ति) सम्भव है। हनुमान में तो योग, ज्ञान एवं भक्ति का समन्वय है - उन्होंने वनवासी राम के सारे दुर्गम कार्य किये (कर्म योग)। उनमें वेद, विज्ञान और आत्मज्ञान था (ज्ञान योग)। उनके हृदय में श्रीराम, लक्ष्मण एवं सीता का नित वास है (भक्ति)। तो हनुमान जी की ही भक्ति कर लो; श्रीराम के

दर्शन हो जाएंगे। हनुमान को गुरु रूप में धारण करो – **जय जय जय हनुमान गुसाईं। कृपा करौ गुरुदेव की नाईं।।**

नक्शबंदिया सूफी प्रथा के महात्मा रामचंद्र जी के अनुसार श्रीराम ब्रह्माण्ड के सूक्ष्म मनोमय कोष से उतरे थे। यह मनुष्य के हृदय में भी होता है। वहां तक भक्ति द्वारा हनुमान की सहायता से सहज ही पहुंचा जा सकता है।

वस्तुतः ये कोष विविध शक्तियों वाली अवस्थाएं हैं। कुल 16 कलाएं या दिव्य शक्तियां मानी गई हैं। श्रीकृष्ण को पूर्ण 16 कलावतार एवं राम को 12 कलावतार माना गया है।

> सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
> तुम रच्छक काहू को डर ना।।

श्री हनुमान के भक्त को सारे सुख मिल जाते हैं और वे अपने भक्त के सुखों की रक्षा भी करते हैं। ये सारे सुख क्या हैं! आठ तरह के सुख बताए गये हैं - 1. सुनने के द्वारा सुख; संगीत आदि 2. देखने का सुख; सौंदर्य की अनुभूति 3. स्पर्श का सुख; यौन एवं वात्सल्य सुख 4. स्वाद का सुख; हमारी जीभ छह हजार तरह के स्वाद की अनुभूति करा सकती है 5. सुगंध संबंधी सुख (हमारी नाक हजारों तरह की गंध पहचान सकती है) 6. बौद्धिक सुख; ज्ञान से मिलने वाली संतुष्टि 7. मन के सुख; प्रेम आदि 8. अहंकार का सुख; अपने यश, सम्मान आदि से होने वाली खुशी। ...ये सब

सांसारिक सुख हैं। इनके अलावा आध्यात्मिक सुख होते हैं। सांसारिक सुख मारते हैं किंतु आध्यात्मिक सुख तारते हैं। ये हैं – नौ तरह की भक्ति से मिलने वाला आनंद। आत्मज्ञान से होने वाली तृप्ति। निष्काम कर्म से शांति की अनुभूति। प्रभु के दर्शन से मिलने वाला आनंद।

ये सारे सुख हनुमान जी की भक्ति से उपलब्ध होते हैं। वे हमें लोक-परलोक का आनंद देते हैं। फिर इस आनंद की रक्षा भी करते हैं।

आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक ते काँपै।।

हनुमान अतिशय तेजस्वी कहे गए हैं। उनके व्यक्तित्व का ओज, शौर्य की तेजस्विता आदि अन्य कोई धारण नहीं कर सकता है। वे अनुपम हैं। ...लंका प्रयाण के वक्त उन्होंने उछाल मारते हुए जोरदार हुंकार भरी थी। उस हुंकार से तीनों लोक कांप गए; वहां के निवासी चौंक गए, डर गए। आश्चर्य मत कीजिए! बिग बैंग के महास्फोट की 'हुंकार' या गूंज आज भी ब्रह्माण्ड में गुंजित है! ऐसे ही पाताल के राजा अहिरावण की कैद से राम लक्ष्मण को छुड़ाना था। पाताल में प्रवेश के लिए हनुमान जी ने भयंकर हुंकार भरते हुए पृथ्वी पर पांव पटका। जमीन वहां टूट गई थी और मार्ग बन गया। उज्जैन व इंदौर से तीस किलोमीटर दूर साँवरे स्थान पर यह घटित हुआ था; ऐसी लोक

मान्यता है। वहां आज उल्टे हनुमान की प्रतिमा है। ...इस पंक्ति में हनुमान के विराट रूप की अभिव्यक्ति है।

भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महावीर जब नाम सुनावै।।

'महावीर जब नाम सुनावै' का मतलब है – **हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करना।** जैसे सांस नियमित, भोजन-पानी, नौकरी-व्यापार आदि नियमित; वैसे ही प्रभु का नाम भी नियमित लेना है। ...**तो जहां हनुमान चालीसा का नियमित पाठ होता है वहां तिर्यक योनि के प्राणी अप्रभावी हो जाते हैं।** भूत, प्रेत, पिशाच आदि इसी योनि के जीव हैं। भूत - वे जीवात्माएं जिनको न तो स्वर्ग लोक मिलता है तथा न ही जिनका पुनर्जन्म हुआ है; वे वायु में भटकती रहती हैं। संचित कर्मदोष एवं नकारात्मक स्वभाव के कारण ये दूसरों को दुख देती हैं। इनमें जो कमजोर होती हैं उन्हें तांत्रिक लोग वश में करके मनमाने काम कराते हैं। पिशाच - ये ताकतवर होते हैं। बहुत ज्यादा खाते हैं। बुद्धिमान होते हैं। गंदगी में रहते हैं या वैसे ही काम कराते हैं। भूत, प्रेत, पिशाच आदि के शरीर में 75 प्रतिशत वायु तत्व एवं 25 फीसदी पृथ्वी तत्व होता है।

हनुमान जी, हर नामक रुद्र अर्थात् जल तत्व यानी शक्ति के अवतार माने गए हैं। उनके जाप के फलस्वरूप मनुष्य के चारों तरफ शक्ति यानी ऊर्जा का घेरा अथवा

कवच बन जाता है। उसके असर से ये दुरात्माएं क्षीण हो जाती हैं – **निकट नहीं आवे।**

विशेष – पुनर्जन्म से पहले जीवात्माएं भुवः लोक में रहती हैं। यह धरती एवं स्वर्ग लोक के मध्य में है। सामान्य जीवात्माओं को गर्भ शीघ्र मिल जाता है और उनका पुनर्जन्म हो जाता है। दुष्ट प्रकृति वाली जीवात्माओं के अनुकूल गर्भ मुश्किल से तैयार होता है। इसीलिए वे भुवः लोक से नीचे वायुमण्डल में भटकती रहती हैं। ये ही कमजोर इच्छाशक्ति वाले मनुष्यों को चपेट में ले लेती हैं। अब प्रेत विशेषज्ञ इनको (1) उचित गति (गया श्राद्ध आदि) में पहुंचा देते हैं (2) इन्हें कहीं कैद कर देते हैं या (3) वापस भुवः लोक की निचली परत में फेंक देते हैं। पुनर्जन्म इनका भी होता है।

जिस तरह मंदिर में झालर या घण्टे की तेज ध्वनि की तरंगों से वायु में अनेक जीवाणु मर जाते हैं, वैसे ही मंत्रों की ऊर्जा तरंगों से वायु तत्व की प्रधानता वाले ये तिर्यक जीव नष्ट हो जाते हैं या उस ठोकर के आघात से अन्य कहीं चले जाते हैं।

नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरन्तर हनुमत बीरा।।

नासै – नष्ट हो जाते हैं। रोग – शरीर की बीमारियां। हरै – दूर कर देते हैं। सब पीरा – दिल दिमाग के सारे क्लेश, बेचैनी, अशांति, अशांति के कारण, मन के विकार आदि। जपत – जाप करने से, केवल इस एक चैपाई का प्रतिदिन 101 बार

पाठ करने से। बीरा – वीर, जीतेंद्रिय, उनके पास राम के नाम का रसायन है, राम के दास हैं; इसलिए वीर हैं।

अर्थ - परमात्मा श्रीराम में आस्था रखो। उनके अनन्य भक्त हनुमान जी को मन, कर्म, वचन से धारण किये रहो। तब हनुमान चालीसा की यह एक चौपाई ही आपका कल्याण कर देगी। ...माता सीता ने हनुमान जी को वरदान दिया था - **राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहउ रघुपति के दासा।।**

इसलिए हनुमान जी को वीर कहा गया है। प्रभु राम उनके रक्षक हैं। नासै रोग – हनुमान चालीसा की प्रत्येक चौपाई मंत्र जैसी है। इसके नियमित पाठ से उन मंत्रों में संचित ऊर्जा मुक्त होती है। यह शब्दों में निहित रहती है। मंत्रोच्चारण से तरंगें बनती हैं। तरंगों से प्रभावशाली ऊर्जा मुक्त होती रहती है। उसके असर से शरीर में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। फलस्वरूप दैहिक एवं मानसिक स्वास्थ्य–लाभ होता रहता है।

संकट ते हनुमान छुड़ावै।
मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।।

श्री हनुमान का ध्यान करने से सभी प्रकार के कष्ट, समस्याएं व दुख दर्द नष्ट हो जाते हैं।

तीन तरह के कष्ट होते हैं – शारीरिक व मानसिक पीड़ा, प्रकृति में उत्पात (अकाल, अतिवृष्टि, भूकम्प, महामारी आदि) से होने वाले कष्ट और संचित कर्मों के परिणामस्वरूप होने वाली तकलीफें (बीमारियां, माता-पिता, पुत्र-पुत्री आदि के कारण मिलने वाले दुख)। इन सबसे मुक्ति का सरल उपाय है – **श्री हनुमान को मन में धारण कर लो। कभी मत भूलो।**

तुम अपना नाम नहीं भूलते हो; नींद में भी कोई तुम्हें नाम से पुकारे तो तत्काल उठ जाओगे। मृत्यु के बाद भी पुनर्जन्म से पहले तक मृतक के नाम से ही जीवात्मा का आह्वान किया जाता है। ...स्वयं के घर का पता, माता-पिता का नाम आदि भी कभी नहीं भूलते हो। ऐसा क्यों? इसलिए कि यह सब तुमने मन में धारण कर लिया है। ऐसे ही हनुमान जी के स्वरूप को भी धारण कर लो – मन में आने वाले बुरे विचारों को हटाते रहो। कर्तव्य कर्म को सेवाभाव से यानी ईमानदारी से करते रहो। ऐसे ही अपशब्द, असत्य कथन, कटु वचन आदि से बचो; ऐसा नहीं करने के प्रति सावधान रहो। केवल मौखिक जाप से काम नहीं चलेगा। सुबह जाप और दिन भर पाप; यह नहीं चलेगा। अपना व अपने परिवार का हर वक्त ध्यान रखते हो, ऐसे ही प्रतिपल सावधान रहो कि श्री हनुमान तुम्हें चौबीसों घण्टे देख रहे हैं। तुम्हारे हृदय में हनुमान हैं। हनुमान के हृदय में श्रीराम हैं। इस तरह तुम्हारे अंदर श्रीराम का वास हो जाएगा। ऐसा करोगे तो जरूर श्री हनुमान तुम्हें सारे कष्टों से मुक्त कर देंगे। ..."**को नहिं जानत है जग में कपि संकट मोचन नाम तिहारो**"।

सब पर राम तपस्वी राजा।
तिन के काज सकल तुम साजा।।

भगवान श्रीराम इस विश्व में सबके (देव, दानव, दैत्य, नाग, गंधर्व, यक्ष, किन्नर, दिक्कपाल, मनुष्य आदि) स्वामी हैं। वे इन सबके मनोवांछित कार्य पूरे करते हैं। लेकिन हनुमान जी ने उन्हीं श्रीराम के सब काम सम्पन्न किये। कितने बड़भागी भक्त हैं हनुमान कि परमात्मा ने अपने काम उनसे कराए। देखिये हनुमान जी ने प्रभु के कौन कौन से काम किये – (1). वानर यूथ के अधिपति सुग्रीव से मैत्री कराई (2). रावण के मित्र वानर राज बाली का वध कराया (3). सीता की खोज के लिए समुद्र पार करते हुए अकेले ही लंका में प्रवेश किया (4). श्रीराम की मुद्रिका सीता जी को दी और उनसे निशानी ला कर श्रीराम को दी (5). रावण की लंका में आग लगा कर उसे मनोवैज्ञानिक तौर पर कमजोर किया (6). रावण के भाई विभीषण को श्रीराम की शरण में लाए, उससे लंका के सारे भेद ज्ञात किये (7). मंदोदरि के कक्ष से वह बाण लेकर आए जो ब्रह्मा जी ने रावण को दिया था और कहा था कि केवल उक्त तीर से ही उसकी मृत्यु सम्भव होगी (8). समुद्र पर पुल बनवाया (9). लंका की गुप्त यज्ञशाला में लक्ष्मण द्वारा मेधनाद का वध कराया (10). युद्ध में मूर्च्छित हो गए लक्ष्मण का जीवन बचाने के लिए संजीवनि बूटी लाए और (11). पाताल के राजा अहिरावण को मार कर राम-लक्ष्मण को मुक्त कराया।

तो ऐसे अनुपम भक्त थे हनुमान। वे श्रीराम के दिव्य निवास वैकुण्ठ के द्वारपाल हैं। उनके पास राम का नाम रूपी रसायन है। वे अष्ट सिद्धि, नव निधि के दाता हैं। उनके हृदय में राम-लक्ष्मण-सीता, नित्य विराजमान हैं।

भगवान जिसके माध्यम से अपने कार्य कराते हैं, उसी के जरिए कृपा भी प्रवाहित करते हैं। यही कारण है कि श्रीराम से अधिक मंदिर हनुमान जी के हैं।

और मनोरथ जो कोई लावै।
सोई अमित जीवन फल पावै।।

हनुमान ने श्रीराम के सारे काम किये। इसलिए इनके भक्त की सारी मनोकामनाएं स्वयं श्रीराम पूरी करते हैं। इनकी भक्ति से श्रीराम को पाया जा सकता है। लेकिन सामान्य मनुष्य के लिए रोटी, कपड़ा, मकान, संतान आदि की अधिक जरूरत रहती है। तो, वह सब भी मिलता है।

इसीलिए कहा गया है कि 'और मनोरथ जो कोई लावै' - अन्य सारी इच्छाएं भी हनुमान जी की भक्ति से पूरी होती हैं। उनके द्वारा जो पूर्ति की जाती है वह नष्ट नहीं होती; अमिट रहती है। आजीवन धन-धान्य रहता है। गीता में इसे योग क्षेम कहा गया है – कृष्ण अपने भक्त की सारी जरूरतें पूरी करते हैं तथा उनकी रक्षा भी करते हैं।

'अमित जीवन फल' का मतलब है – प्रभु की कृपा से मिली हुई सुख-समृद्धि आजीवन खत्म नहीं होती है। ...यदि यों पढ़ें कि – और मनोरथ जो कोई लावै सोई अमित जीवन फल पावै। ये दो बातें हो गईं- पहली यह कि जो मांगोगे वह मिलेगा। दूसरी यह कि उसके अलावा मानव जन्म का अमिट फल यानी मोक्ष भी मिलेगा। आगे कहा भी है कि सांसारिक मृत्यु के बाद ऐसे भक्त का साकेत में 'हरि भक्त' की तरह जन्म होता है - वह वापस दुनिया में नहीं आता है।

चारों जुग परताप तुम्हारा।
है परसिद्ध जगत उजियारा।।

चार युग हैं - सत्, त्रेता, द्वापर और कलियुग। सत् युग में हनुमान हर नामक रुद्र के अवतार थे। उस समय जल संकट बढ़ जाने के कारण ऐसा हुआ। उक्त रुद्र की हथेली में जल तत्व था। भगवान शिव ने इसीलिए उसे कहा कि धरती से जल संकट दूर करो। तब उस रुद्र ने स्वयं के अस्तित्व का विसर्जन किया और नया जन्म लिया। त्रेता युग में तो हनुमान ने श्रीराम भक्त के रूप में अक्षय ख्याति अर्जित की। द्वापर में भीम का गरूर चूर किया और अर्जुन के रथ की ध्वजा पर विराज कर उसे युद्ध में विजयी किया। कलियुग में उनका निवास गंधमादन पर्वत पर बताया जाता है। इसलिए तुलसीदास जी ने कहा है कि **'चारों जुग परताप तुम्हारा'**।

उनका यश विश्वभर में प्रसिद्ध है। रामचरितमानस ग्रंथ विश्व की लगभग 110 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इस आधार पर भी आज यह बात एकदम सत्य सिद्ध होती है कि - 'है परसिद्ध जगत उजियारा'। कहा जाता है कि श्रीलंका के जंगल में मातंग नाम की कबीलाई जाति रहती है। प्रत्येक 41 साल बाद हनुमान जी इन लोगों को सशरीर दर्शन देते हैं। ऐसा इसलिए कि इन लोगों ने यहां हनुमान जी की सेवा की थी। श्रीलंका में हनुमान शिला नाम से एक प्रसिद्ध जगह है। सागर लांघने के बाद वे यहीं पर कूदे थे!

साधु सन्त के तुम रखवारे।
असुर निकन्दन राम दुलारे।।

ये राम भक्त हनुमान जी और क्या करते हैं! – साधु संतों की रक्षा और श्रीराम की कृपा से दुष्टों का व दुष्प्रवृत्तियों का नाश करते हैं। अब इस बात को समझें। साधु यानी वह मनुष्य जिसने समस्त भोग कामना का त्याग कर दिया है। जो मन को अनुशासित करने में लगा हुआ है। जैसे विभीषण था। हनुमान ने लंका दहन के दौरान उसकी रक्षा की; विभीषण का घर नहीं जला। दूसरा अर्थ – सद् वृत्तियों की रक्षा। इन्हें गीता के 16 वें अध्याय में दैवी गुण कहा गया है। हनुमान की भक्ति से मन में निहित सद् गुणों की रक्षा होती है; अन्यथा विपरीत परिस्थितियों में मनुष्य से गलत काम हो जाने की सम्भावना रहती ही है। जिस तरह हमारे रक्त में श्वेत कणिकाएं रोगाणुओं का नाश करती रहती हैं, वैसे ही हनुमान की भक्ति के प्रभाव से मन के

विकार भस्म होते रहते हैं। ...दूसरा शब्द है 'संत'। जो सदैव सम बुद्धि रहते हैं - दुख सुख, शत्रु मित्र, राग द्वेष आदि से प्रभावित नहीं होते हैं। प्रतिपल ईश्वर के ध्यान में स्थिर रहते हुए लौकिक कर्तव्य कर्म करते रहते हैं। ऐसे मनुष्यों की रक्षा हनुमान करते हैं - दुष्टों से, रोग शोक से, आपदाओं आदि से उन्हें बचाते रहते हैं। उनके चारों तरफ चेतन ऊर्जा का रक्षा कवच बन जाता है।

दूसरी पंक्ति में कहा गया है कि असुर निकंदन - बुरे लोग, बुरी आदतें, बुरे भाव आदि। गीता में श्रीकृष्ण ने इन्हें आसुरी वृत्तियां कहा है। वे कहते हैं कि मेरी शरण में आये हुए मनुष्य की आसुरी वृत्तियों को मैं नष्ट कर देता हूं और उनमें दैवीय गुण विकसित करता हूं। यही बात यहां भी कही गई है। ...भक्ति का मतलब केवल माला फेरना नहीं है। इसमें शुद्ध आहार, शुद्ध विहार (आना जाना), शुद्ध आचार आदि का निर्वाह भी जरूरी है। **भक्ति के दौरान मन-कर्म-वचन का अनुशासन भी अनिवार्य है।** तभी इन सबके सामूहिक प्रभाव से आसुरी वृत्तियों का नाश होता है। ...निकंदन का अर्थ है जड़ मूल से समाप्त कर देना।

हनुमान इसीलिए श्रीराम के दुलारे हैं। जिस तरह संतान माता-पिता की दुलारी होती है, वैसे ही हनुमान को श्रीराम अपने हृदय से लगाये रहते हैं। हनुमान यानी भक्त। प्रत्येक भक्त को प्रभु ऐसे ही दुलार करते हैं। श्रीकृष्ण तो कहते हैं कि मेरे या भगवान के भक्त का पुनर्जन्म नहीं होता है। दुलारा होने में यह सत्य निहित है कि परमात्मा अपने भक्त को स्वयं के पास ही रखते हैं। **भक्ति का चरम फल यही है कि मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं हो।**

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता।
अस वर दीन जानकी माता।।

हनुमान जी सारे सुख वैभव देने में सक्षम हैं। उन्हें माता सीता ने वर दिया था कि मनुष्य को आठ सिद्धियों एवं नौ निधियों के सुख तुम ही दे दोगे। इनके लिए प्रभु के सच्चिदानंद में विघ्न डालने की आवश्यकता नही है। ये सिद्धियां वस्तुतः शक्तियां हैं; सूक्ष्म शक्तियां। इनकी सहायता से मनुष्य सर्व समर्थ हो जाता है – अणिमा, लघिमा, गरिमा, महिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशत्व और वशित्व। ऐसे ही नौ निधियां हैं – पद्म, महापद्म, नील, मुकुन्द, नन्द, शंख, मकर, कच्छप, मिश्र या सर्व निधि। इनमें से जो भी निधि मिल जाए वह सात पीढ़ियों तक खत्म नहीं होती है।

हनुमान जी ने माता को प्रभु राम की निशानी दी और उनका सन्देश दिया। साथ ही आश्वस्त किया कि अब श्रीराम यथा शीघ्र लंकेश को मार कर उन्हें ले जाएंगे। तब प्रसन्न हृदया सीता जी ने हनुमान को उक्त वर दिया। श्रीराम ने उन्हें बाद में इसीलिए साकेत के द्वार पर बिठाया कि धन दौलत मांगने वाले हनुमान के पास से ही लौट जाएं। वैकुण्ठ में कामना पुरुषों का क्या काम! (यहां पुरुष शब्द का अर्थ मनुष्य है, यानी स्त्री पुरुष दोनो)। साकेत धाम तो मुमुक्षुओं के लिए है – मोक्ष चाहने वालों के लिए है। सिद्धियों व निधियों में अटके रहने वालों का पुनर्जनम अवश्य होता है।

क्या होता है वरदान! वर यानी श्रेष्ठ; दान का मतलब दे देना। किसी को अपनी शक्ति दे देने को दान कहते हैं। सिद्धियां व निधियां सूक्ष्म शक्तियां होती हैं। इन्हें तपस्या से सिद्ध किया जाता है। इसे आत्मसात करना भी कह सकते हैं। फिर संकल्प शक्ति से इन्हें काम में लिया जाता है। यह सारी प्रक्रिया अति सूक्ष्म होती है। जैसे लेज़र किरणें दिखती नहीं हैं किंतु विलक्षण कार्य करती हैं, ऐसे ही संकल्प शक्ति से वरदान देने जैसा अद्भुत कार्य हो जाता है। सीता माता ने ऐसा ही किया था। **संदीपनि ऋषि** ने अपना सारा ज्ञान **कृष्ण** के हृदय में तत्काल उतार दिया था। **रामकृष्ण परमहंस** ने भी अपनी रूहानी शक्ति नरेंद्र को दे कर उसे **विवेकानन्द** बना दिया था। मेरे **गुरुदेव हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी** ने भी मुझ पर शक्तिपात किया और इस **सत्य को प्रमाणित किया।**

राम रसायन तुम्हरे पासा।
सदा रहो रघुपति के दासा।।

लंका की अशोक वाटिका में माता सीता ने हनुमान जी को वर देते हुए यह बात कही थी।

शब्दार्थ: राम = प्रभु राम का नाम। रसायन = सब रोगों का नाश करने वाली औषधि, वृद्धावस्था को रोकती है। नाम रूपी रसायन सारे दुखों का नाश कर देता है।

तुम्हरे = राम भक्त हनुमान। पासा - हृदय में है। सदा- चिरकाल तक। रहो- रहोगे। दासा - दास भाव वाला भक्त।

अर्थ - तुम मेरे स्वामी के दूत हो, उनके भक्त हो। यहां आकर तुमने स्वामी का बहुत बड़ा काम किया है। उनकी मुद्रिका मुझे देकर मेरे पर भी बड़ा उपकार किया है। अब मेरी चूड़ामणि उन तक पहुंचा कर पुनः हम दोनों को संतोष दोगे। इसलिए मेरा यह आशीर्वाद है कि तुम अनंतकाल तक श्रीराम के दास (भक्त) रहोगे। जब तक यह सृष्टि चलेगी, तब तक तुम राम भक्त के रूप में वरेण्य रहोगे। **तुम्हारे हृदय में राम भक्ति विद्यमान रहेगी।**

ऐसे ही तुम चिर युवा रहोगे। तुम्हारे हृदय में प्रभु राम का नाम रूपी रसायन वृद्धावस्था को रोकेगा। नाम रूपी रसायन से मानव जीवन के सारे कष्ट, रोग आदि नष्ट हो जाते हैं। जिस तरह आयुर्वेद में रसायन औषधि से बल, वीर्य एवं यौवन की रक्षा होती है वैसे ही प्रभु के नाम के प्रभाव से मनुष्य का सर्व कल्याण होता है। नाम के जाप से देह में अपार ऊर्जा उत्पन्न होती रहती है। इसके परिणामस्वरूप शरीर का क्षय ठहर जाता है, विकार नष्ट होते हैं एवं आत्मज्ञान की राह प्रशस्त होती है। ...तुलसीदास ने विनयपत्रिका में भी लिखा है कि, कलि (कलियुग में) नाम कल्पतरु राम को – इस कलियुग में भगवान श्रीराम का नाम लेने मात्र से मनुष्य की सारी मनोकामनाएं पूरी हो जाएंगी। कल्पतरु एक वृक्ष होता है जो केवल स्वर्ग में है। इस शब्द का अन्य अर्थ है - मनोकामनाएं पूरी करने वाली सिद्धि। इस सिद्धि के मंत्र होते हैं, जिन्हें सिद्ध करना पड़ता है या कोई समर्थ गुरु ये मंत्र बख्शीश में भी दे सकता है। इसके दुरुपयोग से यह सिद्धि चली जाती है।

तुम्हरे भजन राम को पावै।
जनम जनम के दुख बिसरावै।।

यहां भी हनुमान जी की महिमा का वर्णन है – हे हनुमान! आपकी भक्ति करने वाले को सहज ही श्रीराम के दर्शन हो जाते हैं। प्रभु राम को पाना है तो हनुमान का भजन करो। राम उनके हृदय में हैं। वे राम के परम धाम वैकुण्ठ के द्वारपाल हैं; बे रोक-टोक तुम्हें अंदर भेज देंगे। उनको हृदय में धारण करोगे तो राम, लखन और जानकी स्वतः ही तुम्हारे अंदर प्रत्यक्ष हो जाएंगे। तुम हनुमान के दास हो और वे श्रीराम के दास हैं। **अतः तुम्हें तो श्रीराम मिल ही जाएंगे।**

अब राम ही मिल गए तो जन्म मरण का चक्र भी छूट गया। सारे जन्मों के दुख मिट जाएंगे। जो संचित भोग कर्म हैं वे भस्म हो जाएंगे। इस तरह उनके परिणामस्वरूप जो दुख आगे के जन्मों में भोगने थे उन से भी छुटकारा मिल जाएगा। इसीलिए कहा है कि **'जन्म जन्म के दुख बिसरावै'**।

गीता में अठारहवें अध्याय के 66 वें श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण ने भी ऐसी ही बात कही है - हे अर्जुन! तुझसे यदि धर्म कर्म नहीं होता है तो इन सबकी चिंता छोड़ दे। **तू मेरी शरण में आ जा। मैं तेरे सारे पाप नष्ट कर दूंगा; पापों से मुक्त कर दूंगा। तू शोक मत कर।**

बिसरावे का मतलब है भूल जाना। हनुमान जी की भक्ति के प्रभाव से श्रीराम तुम्हारे संचित भोग कर्मों को भूल कर तुम्हें मुक्त कर देंगे; जन्म मरण के चक्र से। फिर उस अनंत चेतना में ही लीन रहोगे। वर्तमान शेष जीवन में तो 'जीवन मुक्त' की तरह रहोगे और मृत्यु के बाद पुनर्जन्म नहीं होगा। प्रभु के दर्शन मात्र से सारी कामनाएं झर जाती हैं, विकार नष्ट हो जाते हैं। अनासक्त या निष्काम भाव वाली मानसिक अवस्था में मनुष्य ठहर जाता है। शुद्ध बुद्ध हो जाता है। सबमें एक ही आत्मा का प्रकाश दिखने लगता है। फलस्वरूप मनमुटाव, राग द्वेष आदि मिट जाते हैं। जीव एवं आत्मा का द्वैत समाप्त हो जाता है।

जिस तरह तेज धूप में अनेक कीटाणु-जीवाणु मर जाते हैं; गीले कपड़े सूख जाते हैं, वैसे ही परमात्मा के दिव्य प्रकाश वाले अतिशय तेज से हमारी जीवात्मा के विकार नष्ट हो जाते हैं। हम देखते हैं कि किसी दवा से रोगाणु मर जाते हैं और किसी अन्य दवा से हमारी रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ जाती है। ठीक इसी तरह साधना से, योगाभ्यास से और अंततः ईश्वरीय दिव्य प्रकाश के प्रभाव से जीवात्मा में संचित कर्माणुओं की सूक्ष्मतम कोडिंग नष्ट हो जाती है। ...गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि जैसे अग्नि में तमाम ईंधन जल कर राख हो जाती है वैसे ही ज्ञान की ऊर्जा से विकार भस्म हो जाते हैं। ब्रह्मतेज से स्थूल, सूक्ष्म व कारण शरीर के सारे दोष मिट जाते हैं। ...श्री हनुमान की भक्ति का प्रभाव भी इसी तरह कार्य करता है।

अन्त काल रघुबर पुर जाई।
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई।।

हनुमान जी का भक्त इस लोक में दैहिक मृत्यु के बाद दिव्य साकेत धाम में स्थान प्राप्त करता है। वहां राम-भक्त के रूप में उसे पहचान मिलती है।

ऐसा उल्लेख मिलता है कि प्रभु के भक्त को वैकुण्ठ मार्ग पर अलग-अलग देवता क्रमशः सूक्ष्म लोक पार कराते हुए दिव्य 'विरजा' नदी के तट तक पहुंचा देते हैं। ...ये लोक हैं – भुवर्लोक, स्वर्ग लोक (ये दोनो भी प्रकृति के अधीन रहने के कारण अपनी-अपनी अवधि से नष्ट हो जाते हैं), महः, जनः, तपः लोक (ये सूक्ष्म लोक हैं) आदि। अंत में सत्य लोक है। इसी को वैकुण्ठ कहते हैं। यह सूक्ष्म लोकों में भी सबसे ऊपर है। यहां भी साकेत, विष्णु लोक, शिव लोक और गोलोक हैं। गोलोक श्रीकृष्ण का नित्य लीला धाम है। ...तो तपः लोक के बाद वह भक्त उस विरजा नदी में डुबकी लगाता है। तब उसे वैकुण्ठ या साकेत में प्रवेश मिलता है।

स्पष्टीकरण – विरजा, पानी की नदी नहीं है। वह चेतन ऊर्जा का सनातन प्रवाह है। उस ऊर्जा प्रवाह के संपर्क में आने से मनुष्य का जन्म-जन्मांतर से चला आ रहा देह बोध तत्काल छूट जाता है। आत्म बोध वाला महाकारण शरीर रह जाता है। उसे वैकुण्ठ के पार्षद प्रभु के पास ले जाते हैं। तब वह हरि भक्त के रूप में संबोधि लब्ध करता है। ...हनुमान जी की भक्ति का ऐसा दिव्य फल बताया गया है।

आध्यात्मिक अर्थ - मूलाधार चक्र से सहस्त्रार चक्र तक सात उर्ध्व लोक माने गए हैं। शुरू के तीन स्थूल लोक हैं - मूलाधार, मणिपूर, स्वाधिष्ठान। इससे आगे सूक्ष्म लोक हैं – अनाहत (महः लोक), विशुद्धि (जनः लोक), आज्ञा (तपः लोक) और सहस्त्रार (सत्य लोक)। यही वैकुण्ठ है। हमारी कुण्डलिनी शक्ति (योगाभ्यास से – ज्ञान, कर्म, भक्ति, नामयोग आदि) इन लोकों की यात्रा करती है। कुण्डलिनी यानी सूक्ष्म प्राण। आज्ञा चक्र एवं सहस्त्रार के बीच अथाह ऊर्जा प्रवाह है। इसे पार करना साधक के लिए बहुत कठिन होता है। साधना के दौरान यहीं ठहरने से जन्म जन्मांतर के भोग कर्म कटते हैं। इसी को विरजा नदी में डुबकी लगाना कहते हैं। कुछ रुहानी पंथ इस सहस्त्रार से ऊपर अनामी, अगम, अलख व सतलोक मानते हैं। किन्तु यह बहुत विस्तृत एवं मत-मतांतर वाला विषय है जिसकी यहां जरूरत नहीं है। **...भक्ति से यह चढ़ाई स्वतः हो जाती है; यह तुलसीदास जी का कहना है।**

और देवता चित्त न धरई।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई।।

हनुमान बहुत दयालु हैं। किसी अन्य देवी देवता की भक्ति करने वाला भी उनके द्वार पर आए तो वे उसके लिए सारे सुख साधन कर देते हैं। ...हमारे पुराण साहित्य में 33 कोटि देवताओं की अवधारणा है। इन सबकी पूजा आराधना अलग अलग लोग करते हैं। अब ये देवी देवता यदि आर्त भक्त के दुख दूर नहीं करते हैं तो श्रीहनुमान

उनका भी कल्याण कर देते हैं – सर्व यानी सब तरह के सुख; करहिं यानी उपलब्ध करा देते हैं।

एक बात यह भी है कि हमारे दैवी मंत्र कीलित हैं; उन्हें सिद्ध करना पड़ता है। वे तब फल देते हैं। इसे यों समझें - सेठ जी ने एक नौकर को तो सौ रुपये का नोट दे दिया और दूसरे को चैक दिया। अब नकद वाला तो बजार से तत्काल जरूरी चीजें ले आया। उधर दूसरा नौकर बैंक गया तो किसी कारण बैंक बंद था। दूसरे दिन कैश काउंटर वाले कम्प्यूटर पर सर्वर काम नहीं कर रहा था। तीसरे दिन बाबू बोला कि सेठ के दस्तखत गलत हैं। ...तो कीलित मंत्र इसी तरह फल को विलम्बित करते हैं। उधर हनुमान के तो स्वामी श्रीराम ही बहुत उदार हैं:

ऐसो को उदार जग माहिं।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहिं।।

भक्ति कराए बिना ही कृपा कर देते हैं। हनुमान भी ऐसे ही हैं। **हनुमान चालीसा का पाठ किया, और हो गया काम।** मोरारी बापू ने एक बार कहा कि **जिसे कोई गुरु नहीं मिला है वह हनुमान जी को गुरु के रूप में धारण कर ले।** उसका कल्याण हो जाएगा। **इतने सरल हैं श्रीहनुमान! तुम जय श्रीराम बोलो; हनुमान खुश हो जाएंगे और सारे काम कर देंगे।**

संकट कटै मिटै सब पीरा।
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।।

हनुमान जी की कृपा से सब तरह के कष्ट दूर हो जाते हैं - शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पैशाचिक आदि। सारी वेदनाएं समाप्त हो जाती हैं – अविद्या, अस्मिता, राग द्वेष और अभिनिवेश संबंधी वेदनाएं। उन्होंने सुग्रीव व विभीषण का भला किया। राक्षस योनि में अभिशप्त जीवन भोग रही लंकिनी को मुक्त किया। ...इससे पहले एक चौपाई में कहा कि नासै रोग, हरै सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा यानी हनुमान जी का जाप करते रहो। अब कह रहे हैं कि रोज जाप नहीं कर सकते हो तो कोई बात नहीं। तुम तो उन्हें केवल याद ही रखो। जिस तरह तुम स्वयं को याद रखते हो; सांस लेना कभी नहीं भूलते हो। ऐसे ही हनुमान को अपनी याद का हिस्सा बना लो, अपनी सांस जैसा बना लो। बस, सारे संकट मिट जाएंगे।

तुलसीदास कहते हैं कि जो कोई भी श्रीहनुमान का सुमिरन करता है, भजन करता है, उन्हें हृदय में धारण किये हुए रहता है; उसके **कष्ट एवं वेदनाएं नष्ट हो जाते हैं।**

हनुमान के मंदिर – जो परम ऊर्जा स्थूल देहधारी हनुमान में थी उसी ने उन्हें चिरंजीवि की उच्चतम अवस्था तक पहुंचा दिया। वही शक्ति, मंत्रों में भी संचित की जा सकती है। ऋषियों ने ऐसा ही किया। फिर उन मंत्रों के अनुकूल पत्थर या धातु से उनकी प्रतिमा बनाई जाती है। अनुकूल का मतलब है उक्त ऊर्जा तरंगों को सोखने में समर्थ।

अब उन्हीं मंत्रों के उच्चारण से उस प्रतिमा में प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। कोई सिद्ध महात्मा ही ऐसा कर सकता है। उस वक्त मंत्रों से युक्त हुई दिव्य ऊर्जा उस मूर्ति में प्रवेश करती है। मूर्ति जाग्रत हो जाती है। ...जब हम उस मूर्ति के पास खड़े हो कर प्रार्थना करते हैं तब हमारी प्रार्थना की तरंगें मूर्ति से टकराती हैं। बदले में उससे वैसी ही ऊर्जा निकलती है जैसी स्थूल देह के दौरान प्रभु के भक्त के औरा (Aura) से निकलती थीं। यही हनुमान का आशीर्वाद होता है। उनकी मूर्ति से निकली हुई शक्ति रिमोट की तरह आपका कार्य करने वाले मनुष्य या परिस्थितियों को प्रभावित करती है। ...और काम हो जाता है। तब हम कहते हैं कि हनुमान के चमत्कार से हमारी मनोकामना पूरी हो गई। ...वे प्रकाशमय देह के रूप में साक्षात प्रकट भी हो सकते हैं। आपको टीवी के जरिये विश्व के किसी भी हिस्से में या सब जगह एक साथ दिखाया जा सकता है। यह विद्युत चुम्बकीय तरंगों का कमाल है। ऐसे ही सूर्य विज्ञान की विधि से चेतन तरंगों के जरिये दिव्य देहधारी भक्त, महात्मा आदि कहीं और कभी भी प्रत्यक्ष हो सकते हैं।

आधुनिक क्वांतम फिजिक्स (Quantum Physics) की 'नो हाईडिंग' थ्योरी भी यही कहती है। कोई भी वस्तु या पदार्थ नष्ट नहीं होता है। किसी कारणवश वस्तु एवं सिस्टम के मध्य का संबंध टूट जाता है तो वस्तु किसी अन्य स्पेस में स्थापित हो जाती है। अनुकूल सिस्टम के जरिये उसे पुनः लौटाया जा सकता है। दिव्य देह और मंत्रों के माध्यम से उसके साथ पुनः लिंक स्थापित करना ऐसी ही प्रविधि है।

जय जय जय हनुमान गोसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं।।

गोस्वामी तुलसीदास अब हनुमान जी की जयकार कर रहे हैं। अभी तक तो गुणगान के माध्यम से भक्ति कर रहे थे। राम भक्त के रूप में उनकी प्रशंसा कर रहे थे। लेकिन अब कह रहे हैं - आप की जय हो, जय हो। आप वैसे ही दयालु होएं जैसे मेरे गुरु श्री नरहरि स्वामी थे। स्वयं के गुरु का वास्ता दे रहे हैं। याद करा रहे हैं कि तुलसी तो तब अनाथ बालक था। भिक्षान्न से पेट भरता था। अनाश्रित था। दुर्बल व कमजोर था। उस समय महादेव शिव जी के आदेश से स्वामी नरहरि दास जी ने तुलसी को शरण दी। दीक्षा दी। खाने, रहने, शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था की। उस अनाथ बच्चे के सारे कष्ट दूर किये। ...वैसे ही अब हे हनुमान जी! आप भी मुझ पर कृपा कीजिए। क्या कष्ट था अब! प्रभु श्रीराम के दर्शन हो जाने के बाद अब क्या बाकी रह गया! ...ऐसा कहा जाता है कि तुलसी को एक बार मुगल बादशाह अकबर ने फतेहपुर सीकरी में बुला कर कहा कि उसे श्रीराम के दर्शन कराओ। तुलसी ने मना कर दिया कि भक्ति बिना ऐसा सम्भव नहीं। बादशाह ने उन्हें जेल में बंद कर दिया। उस वक्त गुसांई जी ने हनुमान चालीसा की रचना की। उनका कष्ट दूर भी हो गया। ...यह लोक कथा है, इतिहास नहीं। एक अन्य बात यह है कि काशी के विद्वान उन्हें बहुत तकलीफ देते थे। इसलिए कि तुलसी ने सारा काव्य तत्कालीन साहित्यिक संस्कृत भाषा में न लिख कर

लोक भाषा अवधि में रचा। प्रभु ने उन्हें इस विपदा से भी छुटकारा दिलाया। वे सब विद्वान उनकी प्रशंसा करने लगे।

हनुमान अष्टक की अंतिम पंक्ति से भी अनुमान होता है कि तुलसीदास किसी संकट में अवश्य फंसे थे। उस विपत्ति से छुटकारे के लिए प्रार्थना की – बेगि हरो हनुमान महाप्रभु, जो कछु संकट होय हमारो। ...जो कुछ भी मेरा संकट है, उसे हे महाप्रभु हनुमान! आप शीघ्र दूर करें। महाप्रभु – आप ही मेरे स्वामी हैं। मेरे लिए महान हैं, सबसे बड़े हैं। श्रीराम के भी आपने ही दर्शन कराए थे; इसलिए आप ही मेरे महाप्रभु हैं। आप मेरी समस्या दूर कीजिये।

जो सत बार पाठ कर कोई।
छूटहि बन्दि महा सुख होई।।

सत यानी शत् अर्थात् सौ। ऐसा आज भी प्रचलन में है कि **हनुमान चालीसा के 108 पाठ करने से निश्चित ही मनोवांछित फल मिलता है।** ...तो गोस्वामी जी कह रहे हैं कि जो कोई भी मनुष्य (यानी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, निर्धन, धनवान, स्त्री आदि) ऐसा करेगा, उसका अवश्य ही कल्याण होगा। कैसा कल्याण! जन्म मरण के बंधन से छूट जाएगा। जब जन्म ही नहीं होगा तो दुख भी नहीं रहेंगे। सदैव के लिए सुखी हो जाएगा। मुक्त हो जाएगा। मुक्ति को ही महासुख कहा गया है। इस धरती पर साधना, जप, तप, योग आदि का एक ही लक्ष्य है – मोक्ष, पुनर्जन्म से मुक्ति।

उधर सारी साधनाएं कठिन हैं। इसलिए तुलसीदास कहते हैं कि सौ बार हनुमान चालीसा का पाठ कर लो, बस। ...गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि मेरी शरण में आओ, बस - मुक्ति मिल जाएगी। वे तो जप, तप, पाठ आदि की बात ही नहीं करते हैं। केवल शरणागत होने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। **तू मेरे भरोसे रह; शेष सब मैं देख लूंगा।**

इस चौपाई में पढ़े का अर्थ केवल रीडिंग नहीं है। **पढ़ना यानी पारायण करना। आचार, आहार, विचार आदि शुद्ध रखते हुए श्रीराम – हनुमान के ध्यान में डूबना।** जितनी देर हनुमान चालीसा का पाठ चलता है उतने समय उसी भाव में स्थिर रहना। **फल पढ़ने मात्र से नहीं, वैसी ही मानसिक अवस्था में स्थिर रहने से मिलता है।** ध्यानयोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग, नामयोग आदि; ये सब आंतरिक अवस्थाएं ही हैं। साधना तो वहां तक पहुंचने का अभ्यास है।

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा।
होय सिद्धि साखी गौरीसा।।

गोस्वामी तुलसीदास अश्वासन देते हैं कि जो यानी **कोई भी मनुष्य यह हनुमान चालीसा पढ़ सकता है।** किसी तरह का कोई बंधन नहीं – स्त्री पुरुष, ब्राह्मण शूद्र, बच्चा बूढ़ा, पापी धर्मी आदि। **कोई भी मनुष्य, किसी भी वक्त और किसी भी स्थिति में हनुमान चालीसा का पाठ कर सकता है। यह पाठ अवश्य ही फलदायी होता है।**

'होय सिद्ध' अर्थात् हनुमान चालीसा का पाठ फल देता है। इसे अन्य मंत्रों की तरह सिद्ध नहीं करना पड़ता है। इसके रचयिता तुलसीदास ने रामभक्ति सिद्ध कर ली थी। भगवान शिव के आशीर्वाद से ऐसा सम्भव हुआ। फलस्वरूप यह पूरी हनुमान चालीसा भी सिद्ध की हुई है। हमें तो केवल नियमित पाठ करना है। ...स्वयं भगवान शिव इस कथन के साक्षी हैं (शिव जी ने ही तुलसी के गुरु स्वामी नरहरि दास के भी गुरु को अंतर्वाणी के माध्यम से आदेश दिया कि नरहरि को अनाथ बालक रामबोला के पास भेजो; और कहो कि उस बालक का उद्धार करे। तब स्वामी नरहरि राजापुर गांव गए। रामबोला को अपने आश्रय में लिया। उसे अयोध्या ले गए। वहां उसे गुरु दीक्षा दी और उसका नाम तुलसी रख दिया)। बाद में संकट के समय तुलसीदास जी को शिव जी ने ही हनुमान चालीसा की रचना के लिए प्रेरित किया था। **इसलिए यह रचना सिद्ध मानी जाती है।**

तुलसीदास सदा हरि चेरा।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा।।

तुलसीदास पुनः कहते हैं कि मैं सदैव ही श्रीराम का चेरा यानी दास हूं (सदा हरि चेरा)। ...इसे समझिये कि सदा से क्या मतलब है! तुलसी को वाल्मीकि का अवतार मानते हैं। हमारे पौराणिक इतिहास में छह वाल्मीकि मिलते हैं - शुक्राचार्य यानी

उशनि वाल्मीकि, च्यवन, प्राचेतस (ये महर्षि कश्यप के पुत्र वरुण और देवी चर्षण के पुत्र थे। वम्ण को प्रचेतस भी कहा जाता है। इसलिए उनके पुत्र को प्राचेतस कहा गया), सुपर्ण, ऋष और रत्नाकर वाल्मीकि। प्राचेतस से ले कर रत्नाकर वालमीकि तक सबने रामायण की रचना की थी। (आज जो रामायण उपलब्ध है उसके रचयिता रत्नाकर वाल्मीकि हैं)। इसलिए तुलसीदास जी ने कहा है कि मैं सदैव ही श्रीराम का दास रहा हूं। दास यानी अपने स्वामी के भरोसे पड़ा हुआ हूं। उनके द्वार पर बैठा हुआ हूं। दास की कोई इच्छा नहीं होती। वह तो स्वामी के आदेश का गुलाम होता है। उसका जीवन स्वयं के लिए नहीं, मालिक के लिए होता है। भक्तिमति मीराबाई ने भी लिखा है - **जो देवे सो पहरूं मैं तो, जो देवै सो खाऊं।** जित कहवे तित बैठूँ मैं तो, बेचै तो बिक जाऊं)। ...तो ये तुलसी भी श्रीराम के गुलाम हैं। आरम्भ से ही राम भक्त हैं। दीक्षा ही राम भक्ति की मिली। भगवान शिव से आदेश भी राम कथा लिखने के लिए हुआ। ...यहां 'हरि' शब्द का अर्थ विष्णु नहीं, उनके अवतार श्रीराम हैं। तुलसी पुनः प्रार्थना करते हैं कि अपने इस दास के हृदय में डेरा डालिए – लक्ष्मण, सीता व हनुमान सहित मेरे हृदय में विराजिये। डेरा डालने का यह भी मतलब है कि स्थायी रूप से मेरे अंदर निवास कीजिये। डेरा डालना, एक मुहावरा है; इसका अर्थ है जम जाना। ...दूसरा अर्थ – **जो कोई भी इस हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करे उसके हृदय में आप विराजमान रहें।**

"चौपाई"

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

हे हनुमान जी! आप सभी प्रकार की विपत्तियों, मुश्किलों, समस्याओं को दूर कर देने में समर्थ हैं। ...आपके दर्शन मात्र से मनुष्य का कल्याण हो जाता है। आप सभी तरह की भलाई के मूर्त रूप हैं, साकार रूप हैं। जहां आप की कृपा है, वहां सर्व कल्याण है। हनुमान को यहां पवन तनय यानी पवन देवता का पुत्र कहा गया है। ऐसा माना जाता है कि शिव भक्त माता अंजनी को पवन देवता ने अभिमंत्रित 'पायस' ला कर दिया था। उसके परिणामस्वरूप माता ने पुत्र को जन्म दिया। यह पायस श्रंगी ऋषि द्वारा किये गये पुत्रेष्टि यज्ञ से तैयार क्षीर का अंश था। इसीलिए हनुमान को पवन पुत्र भी कहा जाता है।

इस दोहे में तुलसीदास आगे कहते हैं कि आप समस्त देवों से ऊपर हैं। हमारे धर्म ग्रंथों में 33 कोटि यानी श्रेणी के देवताओं की परिकल्पना है - आठ वसु, ग्यारह रुद्र, बारह आदित्य और देवराज इंद्र एवं प्रजापति ब्रह्मा। ये सब वैकुण्ठ धाम में द्वारपाल हनुमान जी की अनुमति के बिना नहीं जा सकते हैं – राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे। ... तुलसी ने इसी कारण हनुमान को 'सुर भूप' कहा है। इसी के साथ विनति की है कि आप राम-लक्ष्मण- सीता सहित मेरे हृदय में विराजिये। इसका

तात्पर्य यह है कि **हमारे हृदय में क्रमशः ज्ञान, कर्म एवं भक्ति व्याप्त रहे। हनुमान चालीसा के नियमित पाठ से ऐसी कृपा स्वतः ही हो जाती है।**

हनुमान के लिए **मारुति नन्दन** शब्द का प्रयोग भी मिलता है। यह पवन का ही पर्यायवाची शब्द है। हनुमान अमैथुनी सन्तान थे - पवन देवता के मानस पुत्र। जिस तरह पाण्डव विविध देवताओं के पुत्र थे। ऐसी भी मान्यता है! चार प्रकार की सन्तान मानी गई है – मानस शक्ति से, संकल्प शक्ति से, दृष्टि शक्ति से और वीर्य शक्ति से। ब्रह्मा जी के आठ मानस पुत्र थे। प्रजापति कश्यप एवं दक्षराज के हजारों संतान, संकल्प शक्ति के उदाहरण हैं। धृतराष्ट्र, पाण्डु एवं विदुर, महर्षि वेदव्यास की दृष्टि शक्ति (नियोग) से उत्पन्न थे। …अमैथुनी संतान कुछ जलचरों और पादपों में भी पाई गई हैं।

शेष विशेष

कातर पुकार!

हनुमान चालीसा का केंद्रीय भाव है – संकट मोचन। जीवन में आने वाले कष्ट दूर करने के लिए प्रार्थना। यही भाव हनुमान अष्टक में भी है। उसमें बाली वध, सीता की खोज, लंका दहन, रावण वध एवं अहिरावण संहार वाली घटनाएं हैं। अंतिम छह पंक्तियां बड़ी मर्मस्पर्शी हैं। उन्हीं का यहां अर्थ विस्तार किया गया है। एक असहाय की पुकार, करुण याचना, आर्त की वेदना, निर्बल का सबल के चरणों पर आंसू टपकाना आदि। तुलसी की ये पंक्तियां पढ़ते-पढ़ते दिल भीग जाता है, आंखें नम हो जाती हैं।

काज किये बड़ देवन के तुम,
बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को,
जो तुमसों नहिं जात है टारो।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु,
जो कछु संकट होय हमारो।।

हे महावीर हनुमान जी! आप मेरे लिए सबसे बड़े स्वामी हैं - आपकी ही कृपा से मुझे श्रीराम के दुर्लभ दर्शन भी सुलभ हुए। अतः आप की जय हो। आप का यश बहुत महान है। आपने देवताओं और स्वयं भगवान श्रीराम के कठिनतम कार्य पूरे किये हैं। ...अब मेरी बारी है। मैं भी सांसारिक कष्ट में, विपत्ति में पड़ गया हूं। अब

आपके अतिरिक्त अन्य किसकी शरण में जाऊं! और किसे पुकारूं! इस गरीब की मदद आप ही करो।

आप भली-भांति विचार करो कि आपने सदैव देवताओं के ही काम किये हैं। इधर मेरे लिए आप ही देव हैं, प्रभु हैं, स्वामी हैं। इसलिये मेरी प्रार्थना भी सुनो। मैं तो असहाय हूं, सामान्य मनुष्य हूं। मेरी समस्या भी मामूली ही है। ऐसी कोई भी समस्या इस धरती पर नहीं है जिसे आप दूर नहीं कर सकें। समुद्र लांघ गये, अकेले ही रावण की लंका में कोहराम मचा दिया। मेघनाद व रावण जैसे अतिरथी-महारथी को अपने मुष्टि प्रहार से मूर्च्छित कर दिया, अहिरावण को अकेले ही मार कर उसकी कैद से राम लक्ष्मण को मुक्त किया। ...तो आप सर्व सक्षम हैं। फिर मेरा कष्ट मिटाने में विलम्ब क्यों कर रहे हैं। मुझे इस बादशाह की कैद से (या इस गम्भीर रोग से) मुक्त करो।

हे सर्व समर्थ हनुमान जी! अब जल्दी करो। विलम्ब मत करो। मेरे इस दुख का जो कुछ भी कारण (इस जन्म का या प्रारब्ध जनित कोई कारण) हो उसे नष्ट करो। मुझे उबारो। यह कातर पुकार सर्व साधारण मनुष्य पर भी लागू होती है।

कुछ इसी तरह रावण की कैद में असहाय पड़ी हुई सीता माता ने भी याचना की थी -

दीन दयाल विरुद संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी।।

यह सुंदरकाण्ड का प्रसंग है। लंका दहन के बाद हनुमान सीता जी के पास गए। कहा कि माता कोई निशानी दीजिये जिससे प्रभु को संतोष हो। वैदेही ने अपनी चूड़ामणि दे दी। इसके बाद बोली - प्रभु को मेरा प्रणाम कहना और उन्हें उस बाण

का स्मरण कराना जो देवराज इंद्र के पुत्र अपराधी जयंत पर छोड़ा था। उस पातकी ने तो मेरे बदन (वक्षोभ) के एक अंश पर ही कौए के वेष में चोंच मारी थी; फिर भी आपने उस पर जो बाण मारा उससे बचने के लिए जयंत को त्रिलोक में कहीं भी शरण नहीं मिली थी। अंततः वह प्रभु के ही चरणों में गिरा। ...लेकिन रावण तो मेरी सम्पूर्ण देह के स्पर्श का अपराधी है! वह अभी तक जीवित क्यों है! ...प्रभु को उसी बाण का स्मरण कराना।

आगे माता बोली कि मेरी विनति भी उनको सुना देना कि – आप असहायों पर दया करने वाले 'दीनदयाल' हैं। जिनका कोई नहीं, उनके आप हैं। आपका ऐसा यश सर्व विदित है। 'संभारि' बहुत व्यापक है, चारों तरफ लोग जानते हैं कि श्रीराम निर्बल, निर्धन, निःसहाय की रक्षा अवश्य करते हैं। ...तो हे स्वामी! मैं भी भारी विपत्ति में पड़ी हुई हूं; महारथी राक्षस रावण की लंका में अकेली फंसी हुई हूं। चारों तरफ मानव जाति के शत्रु राक्षस राक्षसियां हैं। मेघनाद, कुम्भकर्ण जैसे अतिरथी-महारथी एवं हजारों योद्धाओं से लंका सुरक्षित है। ऐसे में मुझे केवल आप ही बचा सकते हैं। हे स्वामी! मैं आप ही के भरोसे हूं।

यह असहाय की पुकार, निर्बल की आर्त पुकार, सब तरफ से निराश जन की करुण पुकार है! ...यहां मिथिला के सम्राट सीरध्वज की पुत्री नहीं है। अयोध्या के युवराज श्रीराम (अभी राज्याभिषेक नहीं हुआ है) की युवरानी नहीं है। एक असहाय स्त्री है। वह तो दीनदयाल प्रभु को पुकार रही है। त्रिलोक के स्वामी से प्रार्थना कर रही है। तुलसी की भक्ति दास्य भाव की है। इसलिये यहां भी आर्त प्रार्थना है।

सीता जानती है प्रभु राम की सामर्थ्य! स्वयंवर में शिव धनुष को तोड़ा, परशुराम जी का गर्व चूर किया, विश्वामित्र जी के साथ जाकर सुन्दर वन में ताड़का वध किया, खरदूषण एवं उसके 14 हजार सैनिकों को मार दिया। वह अपने स्वामी के अवतारी रूप से अवगत है। इसीलिए उन्हें दीनानाथ कह रही है। ...और यही जानते हुए उन्हें रक्षा के लिए पुकार रही है। तुलसीदास के सम्पूर्ण काव्य में लीला वर्णन के अलावा बेचारे 'रामबोला' की आर्त पुकार भी है। हनुमान चालीसा व हनुमानाष्टक में भी दीन भक्त की पुकार है। यहां भी रावण की कैद में पड़ी हुई असहाय नारी की प्रार्थना है।

ऐसी ही एक अन्य पंक्ति और है रामचरितमानस में - **मंगल भवन अमंगल हारि। द्रवहु सों दसरथ अजिर विहारि।।** ...अर्थात् श्रीराम सब तरह से मनुष्य समाज का कल्याण करने वाले हैं। सारे अमंगल, कष्ट, दुख, क्लेश आदि को दूर करने वाले हैं। ऐसे प्रभु श्रीराम हम पर दया करें; द्रवहु यानी द्रवित हों, हमारी दुरावस्था पर दया करें। ये श्रीराम अपने पिता दशरथ महाराज के आंगन (अजिर) में खेले हैं, बालपन में वहां क्रीड़ाएं की हैं। 'अजिर विहारि' का दूसरा अर्थ है – इंद्रिय जीत के रूप में जीवन व्यापन। श्रीराम का अपनी दसों इंद्रियों (5 ज्ञानेंद्रियां व 5 कर्मेंद्रियां) पर नियंत्रण है। वे इंद्रियजीत हैं। वे जीवन में इंद्रियजीत महापुरुष की तरह विचरण करते हैं। ऐसी ही अवस्था में स्थिर रहते हुए कर्तव्य कर्म करते हैं। ...तो ऐसे प्रभु हम दीनों पर दया करें। ऐसे श्रीराम हमारे सारे कष्ट दूर करें। हमारे जीवन में सर्व मंगल सिद्ध करें।

कितना अधिक संयम है श्रीराम में; यह देखिये -

1. स्वयंवर सभा में आक्रोशित परशुराम जी के कटु वचन सुन कर क्रोधित नहीं हुए।

2. पिता की आज्ञा से चुपचाप वन चले गए। लक्ष्मण ने तो क्रोध व्यक्त कर दिया, किंतु श्रीराम तो संयत रूप से सब की आज्ञा लेते हुए वन गए।

3. भरत जी उन्हें लौटा कर लाने के लिये गए तब कैकेई को पूरा सम्मान देते हुए उस से मिले।

4. भारद्वाज ऋषि के आश्रम में उनके चरण स्पर्श करते हुए आशीर्वाद लिया।

5. अपनी शक्ति हनुमान में प्रेषित की। तब उन्होंने प्रभु के सारे काम किये; फिर भी हनुमान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा – तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।

6. अंगवेरपुर में लक्ष्मण ने भरत जी पर संदेह किया। तब श्रीराम बोले कि भरत के समान निस्पृह मनुष्य इस विश्व में अन्य कोई नहीं है।

7. ब्रह्मर्षि वशिष्ठ ने कहा कि सीता यदि अयोध्या के महल में प्रसव करती है तो प्रजा के लिए यह भारी होगा। तब प्रजा की रक्षा हेतु उन्होंने हृदय पर पत्थर रखते हुए योजनाबद्ध ढंग से सीता को महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में भेजा था।

8. श्रीराम काल के साथ वार्ता कर रहे थे। लक्ष्मण को द्वार पर तैनात किया कि किसी को भी भीतर मत आने देना अन्यथा मृत्युदण्ड के भागी बनोगे। दुर्वासा ऋषि नहीं माने। अंदर चले गए। तब श्रीराम ने अपने लक्ष्मण जैसे अप्रतिम भाई का त्याग किया (उसे मृत्युदण्ड नहीं दिया)।

एक और अद्भुत प्रसंग है – रावण धरती पर मरणासन्न पड़ा हुआ था। श्रीराम ने लक्ष्मण को कहा कि ज्ञान का सूर्य डूब रहा है। जाओ, उससे शिक्षा ग्रहण करो। अपने प्रबलतम शत्रु के लिए इतनी अच्छी बात! श्रीराम ही ऐसा कर सकते हैं। रामेश्वरम् में

शिवलिंग प्रतिष्ठा के बाद उन्होंने यज्ञ के पण्डित दशानन से प्रश्न किया - आपकी दक्षिणा! वह बोला कि मृत्यु से पहले आपके विष्णु रूप (चतुर्भुज रूप) के दर्शन। प्रभु ने कहा, तथास्तु! अवतार पुरुष ऐसे ही महान होते हैं।

ऐसे श्रीराम के लिए कहा गया है कि अजिर विहारि।

इन्हीं श्रीराम के लिए लंकिनी ने कहा था - प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हिरदै राखि कोसलपुर राजा।। लंकिनी रावण की महिला सेनापति थी। उसे समुद्री सीमा की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया था। जब हनुमान सागर पार कर रहे थे तब लंकिनी ने उन्हें बाधित किया। पवन पुत्र के एक हल्के मुष्टि प्रहार से वह अर्द्ध मूर्च्छित हो गई। तब यह बोली; लंका में अपने बलबूते पर प्रवेश मत करना। तुम लंकेश की शक्ति से अनजान हो। वहां की सुरक्षा व्यवस्था से अपरिचित हो। उसकी सामर्थ्य से केवल प्रभु राम ही पार पा सकते हैं। इसलिए अपने हृदय में प्रभु श्रीराम को धारण करो। फिर लंका में प्रवेश करो। प्रभु की शक्ति से तुम वह कार्य कर सकोगे जिसके लिए वहां जा रहे हो। राम की सामर्थ्य पर उस राक्षसी को भी इतना यकीन था। यद्यपि हनुमान के हृदय में श्रीराम ही विराजमान थे किंतु लंकिनी अनभिज्ञ थी। ...सुन्दरकाण्ड की दूसरी चौपाई है - **यह कहि नाइ सबन्हि कहुं माथा। चलेउ हरषि हिय धरि रघुनाथा।।** ...तो ऐसे उन्हीं श्रीराम से सीता ने प्रार्थना की है कि – **दीनदयाल विरुद संभारी। हरहु नाथ मम संकट भारी।।**

दीर्घायु का रहस्य!

क्या योगनिद्रा अथवा समाधि में रह कर मनुष्य खुद की आयु बढ़ा सकता है? हजारों साल तक लम्बी कर सकता है! यहां इसकी सम्भावनाओं का विश्लेषण करते हैं।

1. रूस के साईबेरिया क्षेत्र में एक जीवाणु मिला, 35 लाख वर्ष पुराना ...यानी इतनी लम्बी अवधि से जीवित था।

2. मध्य योरोप व दक्षिणी योरोप में 'एल्पाइन मर्मोट' प्रजाति की गिलहरी जैसा पशु है। लगभग 100000 फीट की ऊंचाई पर पाया जाता है। साल में नौ माह शीत निद्रा में रहता है। उस समय प्रति मिनट 2-3 बार सांस लेता है। धड़कन भी 120 से घट कर 4-5 तक रह जाती है। अतिशय ठंडे वातावरण से बचने के लिए ऐसा करता है।

3. अमेरिकी काला भालू, दक्षिण एशियाई काला भालू व उत्तरी ध्रुवीय भूरा भालू भी शीत निद्रा में रहते हैं – सौ दिन तक लगातार | इस दौरान प्रति मिनट 7-8 बार सांस लेते हैं; इनकी सामान्य श्वसन गति 40-50 सांस प्रति मिनट मानी गई है। ...ऐसे अन्य अनेक प्राणी हैं- मधुमक्खी, घोंघा, मेंढक, सांप, कछुआ आदि। ...तो शीत निद्रा वैज्ञानिक सत्य है। इस दौरान सांस कम लेने से शरीर का क्षय रुकता है और मौसम के साथ अनुमूलन स्थापित होता है। साइबेरिया वाले जीवाणु पर शोध किया जा रहा है कि क्या अधिक शीत दीर्घायु का आधार है! प्रकृति में बोसॅन कण (ऊर्जा) माइनस 273 डि.से. पर भी अस्तित्व में रहते हैं। यह पदार्थ की पांचवीं अवस्था है। हिमालय के उच्च व अति ठण्डे क्षेत्रों में योगियों का निवास वैदिक काल से ही चला आ रहा है।

उनकी दीर्घायु में अवश्य ही इस शीत की कोई भूमिका होगी। उधर मिस्र में अनेक ममीज़ 4-5 हजार साल से सुरक्षित हैं! पिरामिड की बनावट और मसालों का संयुक्त कमाल। ...तो जब शव को दीर्धकाल तक यथावत रखना सम्भव है तो जीवन या देह को भी लम्बे वक्त तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

योगीजन प्राणायाम एवं समाधि की अवस्था में श्वांस की गति को लगभग रोक लेते हैं – प्रति मिनट 15-18 की तुलना में 3-4 तक। कभी कभी एक तक। घोंघा (शीत निद्रा के दौरान) प्रति बारह मिनट में एक बार सांस लेता है। खुद मेरा अभ्यास भी आठ श्वास प्रति मिनट का है। उधर क्रिया योग वाली विधि में तो स्थूल सांस लेने की प्रक्रिया ही तोड़ दी जाती है। ये क्रिया योगीजन सूक्ष्म प्राण से जीवित रहते हैं।

...प्रत्येक मनुष्य में दो प्राण व्यवस्थाएं होती हैं -

1. स्थूल प्राण यानी नाक से सांस लेना। यह प्रक्रिया टूटते ही स्थूल शरीर की मृत्यु हो जाती है।

2. सूक्ष्म प्राण; यही प्राण चेतना है। सूक्ष्म एवं कारण शरीर आपस में सूक्ष्म प्राण ऊर्जा के द्वारा जुड़े हुए रहते हैं।

मतलब कि आत्मा और अंतःकरण चतुष्टय (चित्, मन, बुद्धि, अहंकार) को सूक्ष्म प्राण ही आबद्ध रखते हैं। तो योगीजन अपनी इच्छा से स्थूल प्राण वाली प्रक्रिया को स्थगित कर देते हैं। परिणामस्वरूप शरीर के क्षय की प्रवृत्ति ठहर जाती है। ऊर्जा खर्च ही नहीं हो रही है तो क्षय क्यों होगा! परिणाम है दीर्ध जीवन। ...महावतार बाबा जी महाराज की आयु दो हजार वर्ष बताई जाती है। वे क्रिया योगी हैं। हिमालय के अंतर्वर्ती क्षेत्र सिद्धाश्रम में रहते हैं। वहीं इतनी और इससे भी ज्यादा उम्र वाले योगी भी बताए जाते

हैं। ये इच्छाधारी होते हैं – जब चाहे भौतिक शरीर धारण कर सकते हैं; अन्यथा प्रकाशरूप देह से आते-जाते हैं। सिद्धाश्रम का रहस्य बताने वाले परमहंस विशुद्धानंद जी को ऐसे प्रत्यक्ष दर्शन हुए हैं। महामहोपाध्याय गोपीनाथ जी ने भी इस विषय में बहुत लिखा है। किंतु प्रश्न यह है कि उक्त अवस्था अंततः कितने लम्बे समय तक रह सकती है! क्या हजारों वर्ष तक? ...मुझे ज्ञात नहीं।

उधर, ध्यान एवं प्राणायाम के द्वारा भी श्वसन पर नियंत्रण हो जाता है। सांस की गति प्रति मिनट चार तक सीमित रह जाती है। ...अब इसे यों समझो – सामान्य मनुष्य एक दिन में लगभग 23040 सांस (प्रति मिनट 18 के हिसाब से) लेता है। उधर ध्यान, प्राणायाम साधना का अभ्यासी 11520 सांस (प्रतिमिनट 8 की गति से) ही लेता है; यानी प्रतिदिन 11520 सांस कम लेता है। एक साल में उसने सामान्य मनुष्य की अपेक्षा 748800 सांस कम ली। इस तरह उसने एक साल में 180 दिन बचा लिए। चालीस वर्ष में दिन यानी लगभग बीस वर्ष बचा लिए। उम्र की यह अवधि इस आधार पर कई गुना बढ़ जाती है कि दस वर्ष तक शरीर की ऊर्जा खर्च ही नहीं हुई! नए कर्म संस्कार संचित नहीं हुए। रूहानी करम भी होता रहा। इन सबके परिणामस्वरूप आयु अधिक बढ़ जाती है। फिर भी कितनी! मै नहीं जानता।

समाधि में शरीर मानो सीज़ हो जाता है। कोल्ड स्टोरेज में रखी हुई वस्तु की तरह हो जाता है। ऊर्जा का खर्च होना रुक जाता है। सांस प्रति मिनट एक तक सीमित रह जाती है। यहां हम क्रियायोग से इतर रह कर बात कर रहे हैं। ऐसा पूरे जीवन में रह-रह कर अनेक बार होता है। बार-बार समाधि लगती रहती है और शरीर स्वस्थ बना रहता है। शरीर का क्षय नहीं होने पर वह जीवात्मा के लिए 'जीर्ण शीर्ण वस्त्र' जैसा होता ही नहीं है। उसे शरीर रूपी वस्त्र बदलने की जरूरत ही नहीं पड़ती है। देह

नई जैसी या युवा, निरोगी ही रहती है। ...किंतु कब तक! क्या हजारों, लाखों साल तक?

थोड़ा और आगे बढ़ें। उल्लेख मिलता है कि प्रथम योगी महादेव शिव की समाधि 85 वर्ष बाद टूटी थी। इस दौरान सात मनुष्य उनके शरीर की देखभाल कर रहे थे। समाधि से बाहर आने के बाद उन्होनें उक्त मनुष्यों को योग का उपदेश दिया और अभ्यास भी कराया। वे ही सप्त ऋषि कहे गए। ...तो समाधि इतनी लम्बी अवधि तक भी लग सकती है। इस दशा में केवल शरीर जीवित रहता है, अन्य कोई आंतरिक क्रिया नहीं होती है। बाहर वालों के लिए वह मृत देह जैसा दिखता है।

शरीर किस रूप में लम्बी अवधि तक जीवित रहता है? ...कोई भी पदार्थ नष्ट होने के बाद ऊर्जा रूप में सदैव विद्यमान रहता है; कथित प्रलय तक। ऐसे ही मनुष्य का शरीर भी मर कर पंच महाभूतों यानी तत्वों के रूप में रहता है। फिर वे पांचों तत्व अपने मूल स्रोत महत् तत्व में समा जाते हैं। ...तो शरीर भी और ज्यादा सूक्ष्म रूप से महत् में लय रहता है। यह महत् भी उसके उत्स अपरा प्रकृति संज्ञा वाली अति सूक्ष्म अवस्था में लीन हो जाता है। तब केवल चेतन और अचेतन ऊर्जा या चेतन-जड़ शक्ति शेष रहती है।

तो क्या ये युग्मनज रूप में रहती हैं? अद्वैत रूप में रहती हैं? ...क्या पता! किंतु गीता में श्रीकृष्ण ने सातवें अध्याय के 5, 6 वें श्लोक में कहा है कि पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार; यह आठ धाराओं वाली प्रकृति मेरी अपरा प्रकृति या जड़ शक्ति है। उधर सम्पूर्ण जीवित प्राणियों को धारण करने वाली मेरी परा प्रकृति ही ब्रह्म की जीव रूपा शक्ति है। सारा विश्व, इन दोनों प्रकृतियों से ही उत्पन्न

होता है; और मैं यानी परमात्मा इसका प्रभव (सृजन, सृष्टि या उत्पत्ति) एवं प्रलय हूं। ...तो समस्त प्राणी और पदार्थ भी नष्ट नहीं होते हैं। वे परा एवं अपरा प्रकृति या प्रभु की चेतन एवं जड़ शक्ति के रूप में सदैव अति सूक्ष्मतः विद्यमान रहते हैं। इस अंतिम अवस्था से पहले, सिद्ध महात्मागण तीन तरह की देह से विचरण करते रहने में समर्थ होते हैं – प्रकाश देह, परमाणु देह और भौतिक देह। सम्भवतः यही अमरत्व है और ऐसी सामर्थ्य से युक्त महात्मा ही अमर कहे जाते हैं।

आत्मा!

आत्मा - विज्ञान का मत है कि आत्मा जिन फेब्रिक्स (संरचनाओं) का संकुल है वो ब्रह्माण्ड में आरम्भ से ही हैं। ये न्यूरांस से अलग हैं। ये मस्तिष्क के केंद्र में पाये जाते हैं। ये एक तरह के ट्यूबुल्स (Tubules) होते हैं – नलिकानुमां। इनमें कोई रसायन होता है। मृत्यु के बाद भी ये नष्ट नहीं होते हैं। क्वांता में रूपांतरित हो कर ब्रह्माण्ड में चले जाते हैं। इनमें जो सूचनाएं होती हैं वे नष्ट नहीं होतीं। पुनर्जन्म के बाद मस्तिष्कीय सिस्टम द्वारा पुनः इनके साथ सम्पर्क हो जाता है।

इसे मायथॉलॉजी में यों कहते हैं – जीवात्मा के साथ अंतःकरण चतुष्टय होता है – चित्, मन, बुद्धि, अहंकार। चित् में हमारे द्वारा किये जाने वाले कर्मों की सूक्ष्म छाप अंकित होती रहती है। इन्हें कर्माणु कहते हैं। मृत्यु के बाद जीवात्मा इस अंतःकरण के साथ मृत शरीर से बाहर निकल जाती है। पुनर्जन्म के द्वारा वापस देह में

प्रवेश करती है। तब चित् में संचित कर्माणु या माइक्रो डॉट्स (Microdots) के अनुसार ही जीवन का नेटवर्क बनता जाता है। इसे प्रारब्ध का भोग कहते हैं।

क्वांतम भौतिकी में 'नो हाईडिंग' सिद्धांत भी यही मानता है कि सूचनाओं के स्पेस (जगह) कई बार बदल जाते हैं; किंतु इसका यह मतलब नहीं कि वे सूचनाएं नष्ट हो गईं। सिस्टम के साथ उनका सम्पर्क वापस बन जाता है। इसीलिए यह मानते हैं कि राम और कृष्ण के जीवनकाल में जो कुछ घटित हुआ था, वह ब्रह्माण्ड में क्वांतम सूचना तंत्र या क्वांतम कोडिंग के रूप में सुरक्षित है। जब भी उस समय के मनुष्यों जैसा मस्तिष्कीय सिस्टम वापस आज या भावी मनुष्य में बनेगा तो वे सारी बातें ज्ञात हो सकेंगी। सिद्ध महात्मागण ऐसी डी कोडिंग तकनीक जानते हैं। इसीलिए कई बार वे अतीत एवं भविष्य के विषय में बता देते हैं।

ट्यूबुअल एक प्रकार का लम्बा सिलिंड्रिकल (cylindrical) रसायन होता है। कभी कभी मरणासन्न मनुष्य के अंदर यह त्वरित गति से क्वांता (सूक्ष्मतम कणों या ऊर्जा) में बदल जाता है। फिर ऊर्जा या चेतना रूपेण देह से बाहर निकल जाता है। यदि वह मनुष्य स्वस्थ हो जाता है तो उक्त क्वांतम ऊर्जा (रसायन) उसके ब्रेन में वापस आ जाती है। तब एक धुंधली सी स्मृति के आधार पर वह अपनी मत्यु के अनुभव सुनाता है। लेकिन विज्ञान के पास इस सवाल का जवाब नहीं है कि पुनर्जन्म के बाद यही ट्यूबुअल्स संबद्ध मनुष्य के शरीर में किस विधि से प्रवेश करता है!

पुनर्जन्म, आत्मा और क्वांतम!

क्वांतम, आत्मा नहीं है। यह ऐसी विधि है जिसके द्वारा आत्मा, ब्रह्माण्ड की मूल ऊर्जा, मूलभूत कण - क्वार्क, बोसॉन, लेप्टान, फोटोन आदि की कार्य प्रणाली का अध्ययन किया जाता है। आत्मा भी ऊर्जा, जैव ऊर्जा, लाईफ फोर्स ही है। इसलिए विज्ञान को आशा है कि क्वांतम यांत्रिकी से आत्मा की सत्ता को समझा जा सकेगा।

...एक उदाहरण - फोटोन या प्रकाश का क्वांतम (प्रमात्र) जब किसी पदार्थ पर पड़ता है तो वहां एक माइक्रो डॉट, सूक्ष्मतम बिंदु बन जाता है। ऐसे ही आत्मा से संयुक्त चित् पर हमारी सोच, भावना, कर्म आदि के माइक्रो प्रिंट बन जाते हैं। इन्हें कर्माणु कहा जाता है। क्वांतम प्रविधि में यह अध्ययन किया जाता है कि परमाणु का उपकण, इलेक्ट्रॉन, तरंग (ऊर्जा) और कण; दोनो रूप में कार्य कैसे करते हैं। इसी तरह अध्यात्म में यह समझना है कि कर्माणु हमारे जीवन को नियंत्रित कैसे करते हैं!

ऐसे ही ब्रह्माण्ड में जो ऊर्जा व्याप्त रहती है वह सतत नहीं है। उसका रूपांतरण होता रहता है।

इस रूपांतरण की सीमा क्या है! उधर चेतन ऊर्जा की अंतःकरण चतुष्टय पर प्रभाव की मात्रा कितनी है! क्या अनंत काल तक! ट्यूबुअल्स का रसायन किस तरह क्वांता में रूपांतरित होकर ब्रह्माण्ड में चला जाता है! उधर एक ही जीवात्मा जब पुनर्जन्म लेती है तब पहले वाली हमारी कर्म सूचनाएं ही किस विधि से पुनः हमसे जुड़ जाती हैं!

पुरुष के वाय क्रोमोसोम पर एसआरवाई वंशाणु इस बात का प्रमाण है कि आनुवंशिकी के द्वारा अनेक गुण पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होते रहते हैं, नष्ट नहीं होते। इस वंशाणु के माध्यम से आपके गोत्र पुरुष तक (20, 30 हजार वर्ष पूर्व तक) पहुंचा जा सकता है। इस वंशाणु की माईक्रो कोडिंग में जो कुछ भी है, सुरक्षित है। लेकिन कैसे! इसका अध्ययन हमारे ऋषियों ने किया था। अब विज्ञान इसे क्वांतम यांत्रिकी के जरिये करना चाहता है।

हम आत्मा को समष्टि चेतना का क्वांतम कह सकते हैं !

जिस तरह फोटोन को लाईट का क्वांतम कह दिया जाता है, उसी तरह आत्मा को समष्टि चेतना का क्वांतम कह सकते हैं। और समष्टि चेतना को क्या कहेंगे! दिव्य प्रकाश। भौतिक प्रकाश तो विद्युत चुम्बकीय तरंगें हैं। ऐसे ही दिव्य प्रकाश को ऐसी जैव या चेतन विद्युत तरंग कह सकते हैं जिसका क्वांता, कण नहीं बिंदु होता है; दिव्य ज्योति बिंदु। यहीं हम शैवमत के नाद और बिंदु तक पहुंच जाते हैं – क्वांतम फिजिक्स में प्रकाश की तरंग और कण; तथा अध्यात्म में चेतन शक्ति का नाद एवं बिंदु। तो यह नाद क्या है! ब्रह्माण्ड व्यापी क्वांतम, सूक्ष्मतम कणों के घर्षण से निरंतर गूंजती हुई ध्वनि, ओम्। इसे नासा ने भी स्वीकार किया है कि सूर्य से प्रति सेकण्ड

निकलती हुई ऊर्जा से आकाश में ओम् जैसी गूंज श्रुतिगोचर होती है। क्वांतम भौतिकी मानती है कि ब्रह्माण्ड व्यापी ऊर्जा और उसके प्रमात्रा एक समान नहीं रहते हैं; रूप बदलते रहते हैं किंतु नष्ट नहीं होते। मायथॉलॉजी में भी ब्रह्माण्ड को सनातन माना गया है। प्रलयकाल के दौरान सम्पूर्ण प्रकृति (ब्रह्माण्ड) परब्रह्म (दिव्य प्रकाश) में लीन हो जाती है। भौतिकी के मुताबिक यह बिग बैंग से पहले वाली परमाण्विक इकाई में सिमट जाता है। अब तो भारतीय दर्शन की भांति भौतिकी के विशेषज्ञ भी 'मल्टीवर्स' (अनेक ब्रह्माण्ड) का अस्तित्व स्वीकार करते हैं।

सचेतन तत्व (परा) + अचेतन तत्व (अपरा) प्रकृति = प्रकृति, सृष्टि। वैसे ही जैसे अक्रिय अण्डाणु + सक्रिय शुक्राणु = युग्मनज कोशिका। इससे पूरा बच्चा बनता है। उधर अपरा प्रकृति से फिर सजीव, निर्जीव एवं सारी सृष्टि बनती है। क्योंकि प्रकृति तो चेतन व अचेतन, दोनो तत्वों का संघात है। या कहें कि अक्रिय (अपरा) और सक्रिय (परा) का युग्मनज रूप है। ...अब ऊर्जा - मूल कण- क्वार्क, फोटोन, लेप्टॉन, बोसॉन। फिर इलेक्ट्रान, न्यूट्रान आदि। तत्पश्चात परमाणु, अणु, कण, पदार्थ। फिर ठोस, द्रव, गैस, प्लाज्मा, बोस आइंस्टाइन कण्डेंस।

ऐसे ही हाईड्रोजन, हीलियम आदि। फिर क्वार्क, लेप्टान आदि। अब तत्व, यौगिक, मिश्रण। उधर हाइड्रोजन+अमोनिया+मीथेन : प्रोटीन। ...कार्बनिक पदार्थ के तौर पर प्रोटीन का गठन कार्बन, नाइट्रोजन, ऑक्सीजन व हाइड्रोजन तत्वों के अणुओं से होता है। किंतु रासायनिक गठन के अंतर्गत सरल प्रोटीन का निर्माण अमीनो अम्ल से होता है। प्रोटीन से कोशिका। कोशिका में 14 उप अंग, जीवद्रव्य, माइटोकांड्रिया। यह माइटोकांड्रिया ही कोशिका का पॉवर हाउस है। ...तो क्वांतम सिद्धांत के अनुसार **सब कुछ ऊर्जा का रूपांतरण है।**

जय श्रीराम!

परिचय – श्री शिव शर्मा

राजकीय महाविद्यालय, देवली (टोंक) के हिन्दी विभाग से सेवानिवृत्त। अध्ययन, लेखन, प्रकाशन की चालीस वर्षीय यात्रा। पत्रकारिता में शताधिक लेख, फीचर्स प्रकाशित; स्तम्भ लेखन व सम्पादन क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य। जिला पत्रकार संघ (अजमेर) एवं एन.एम.एफ.आई. (ऋषिकेश) से पुरस्कृत।

प्रकाशित पुस्तकें – 1. अजमेर; इतिहास एवं पर्यटन 2. पुष्कर; अध्यात्म एवं इतिहास 3. हमारे पूज्य गुरुदेव 4. दशानन चरित 5. गुरु भक्ति की कहानियाँ 6. मोक्ष का सत्य 7. सूफी संत और उनकी कथाएँ 8. कर्मण्येवाधिकारस्ते 9. गीता पाप मोचनी 10. गीता में जीवन की पूर्णता 11. सद्गुरु शरणम् 12. नारी मुक्ति 13. अवतार का रहस्य 14.श्रीकृष्ण से मुलाकात 15. गीता – 150 प्रश्नोत्तर 16. एक श्लोक की गीता 17. संत श्री सेवाराम 18. रूहानी पुरुष 19. श्री राम चरित 20. श्रीकृष्ण जयते 21. श्री हनुमान चालीसा – विस्तृत व्याख्या

आगामी पुस्तकें – चेतन तत्व, रूहानी संवाद और कसक (कविता संग्रह)

इस पुस्तक से – तुम मेरे स्वामी के दूत हो, उन के भक्त हो। यहां आ कर तुमने स्वामी का बहुत बड़ा काम किया है। उन की मुद्रिका मुझे दे कर मेरे पर भी बड़ा उपकार किया है। अब मेरी चूड़ामणि उन तक पहुंचा कर पुनः हम दोनों को संतोष दोगे। इसलिए मेरा यह आशीर्वाद है कि तुम अनंत काल तक श्रीराम के दास (भक्त) रहोगे। जब तक यह सृष्टि चलेगी, तब तक तुम राम भक्त के रूप में वरेण्य रहोगे। तुम्हारे हृदय में राम भक्ति विद्यमान रहेगी।